आज़ादी का अमृत महोत्सव

हडको

G20 भारत 2023 INDIA
वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

चिरई

हडको क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता की हिंदी गृह पत्रिका

वर्ष-2022-23, अंक-3, अप्रैल, 2023

अंक 3

हडको

हाउसिंग एण्ड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड

(भारत सरकार का उपक्रम)

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता, हडको भवन

प्लॉट संख्या-11, ब्लॉक-डी जे, सेक्टर-II, करुणामयी, साल्टलेक, कोलकाता-700091

हडको, क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता के कर्मचारियों के साथ निदेशक (वित्त) एवं कार्यकारी निदेशक (प्रचालन)

हडको निदेशक (वित्त) एवं कार्यकारी निदेशक (प्रचालन) ने श्री फिरहाद हाकिम, मंत्री, शहरी विकास तथा नगरपालिका मामला विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार एवं माननीय मेयर, कोलकाता नगर निगम और श्रीमती चंद्रिमा भट्टाचार्य, मंत्री, वित्त विभाग और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, भूमि तथा भूमि सुधार एवं शरणार्थी, राहत एवं पुनर्वास, योजना तथा सांख्यिकी विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार से मुलाकात किया।

चिरई

हडको क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता की हिंदी गृह पत्रिका

वर्ष-2022-23, अंक-3, अप्रैल, 2023

संपादक मण्डली

मुख्य संरक्षक

डॉ. आलोक कुमार जोशी

कार्यकारी निदेशक (प्रचालन/राजभाषा)

संरक्षक

देबेश चक्रबर्ती

क्षेत्रीय प्रमुख (प्रभारी), कोलकाता

परामर्शदाता

श्री प्रशांत कुमार कुवँर, संयुक्त महाप्रबंधक (परियोजना)

श्री विक्टर भट्टाचार्जी, संयुक्त महाप्रबंधक (आई टी)

संपादक मण्डली

श्री दीपंकर दत्ता, सहायक महाप्रबंधक
(सचिवीय) सह-हिंदी नोडल अधिकारी

श्री वरूण कुमार सिंह, वरिष्ठ प्रबंधक (प्रशासन)

सुश्री अर्चिता दत्ता, उप प्रबंधक (वित्त)
सह-नोडल सहायक

श्री स्वरूप दास, उप प्रबंधक (आई टी)

सहयोग

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता के
समस्त सहकर्मी एवं परिवार-गण

हाउसिंग एण्ड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड

(भारत सरकार का उपक्रम)

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता, हडको भवन

प्लॉट संख्या-11, ब्लॉक-डी जे, सेक्टर-II, करुणामयी, साल्टलेक, कोलकाता-700091

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं को सुनने के लिए QR कोड को अपने मोबाइल से स्कैन करें। यह QR कोड रचनाओं के हर पृष्ठ पर दिया गया है। दाई ओर दिये गए QR कोड को स्कैन करके आप अनुक्रम में दिये गए सभी रचनाओं को देख व सुन सकते है।

नोट : पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता एवं उनमें व्यक्त विचारों के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी है। अतः पत्रिका में व्यक्त विचारों के लिए संपादक, प्रबंधकीय मंडल तथा हडको प्रबंधन किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं है। निःशुल्क व आंतरिक वितरण हेतु मुद्रित व प्रकाशित।

> "समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।" - (जस्टिस) कृष्णस्वामी अय्यर

हडको निदेशक मण्डली के सदस्य

श्री कुलदीप नारायण, भा.प्र.से.
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक (अतिरिक्त प्रभार), हडको एवं
संयुक्त सचिव (एच एफ ए),
आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय, भारत सरकार

श्री एम. नागराज
निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग)

श्री डी. गुहन
निदेशक (वित्त)

श्री संजीत, आईआरएएस
अंशकालिक सरकारी निदेशक, हडको

श्रीमती सबिथा बोजन
स्वतंत्र निदेशक

डॉ. रवींद्र कुमार राय
स्वतंत्र निदेशक

डॉ. सियाराम सिंह
स्वतंत्र निदेशक

श्री बंशी लाल गुजर
स्वतंत्र निदेशक

"हिंदी का काम देश का काम है, समूचे राष्ट्रनिर्माण का प्रश्न है।"
- बाबूराम सक्सेना

अनुक्रमणिका

क्र		शीर्षक		पृष्ठ
1	संदेश	कुलदीप नारायण, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक		6
2		एम. नागराज, निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग)		7
3		डी. गुहन, निदेशक (वित्त)		8
4		अरुण कुमार चतुर्वेदी, प्रमुख सतर्कता अधिकारी		9
5		डॉ. आलोक कुमार जोशी, कार्यकारी निदेशक (राजभाषा)		10
6		सुरेन्द्र कुमार, महाप्रबंधक (परियोजना / राजभाषा)		11
7		देबेश चक्रबर्ती, क्षेत्रीय प्रमुख (प्रभारी)		12
8		दीपंकर दत्ता एवं अर्चिता दत्ता, हिंदी नोडल अधिकारी एवं नोडल सहायक		13
9	कहानी, आलेख, यात्रा संस्मरण एवं अन्य लेख	कोलकाता क्षेत्र द्वारा हडको का प्रचालन : पश्चिम बंगाल और सिक्किम	देबेश चक्रबर्ती	14
10		पश्चिम बंगाल और सिक्किम में हडको द्वारा वित्तपोषित योजनाओं की झलक		16
11		व्यवसाय सृजन : राज्य/ एजेंसी पदाधिकारियों के साथ बैठक		19
12		सुपर फूड "बाजरा"	प्रशांत कुमार कुवंर	26
13		जलवायु परिवर्तन	जयंत कुमार दे	29
14		कृत्रिम बुद्धिमत्ता या Artificial Intelligence	विक्टर भट्टाचार्जी	30
15		हरित वित्त - वैश्विक और भारतीय परिप्रेक्ष्य पर एक अद्यतन	रिसव चक्रबर्ती	32
16		वित्तीय जोखिम प्रबंधन	भावना जैन	34
17		कृत्रिम बुद्धिमत्ता	दीपंकर दत्ता	36
18		बंगाल के पर्यटन स्थलों की एक झलक	देबेश चक्रबर्ती	38
19		मेरा भारत महान	अशीमा मल्लिक	41
20		पूंजीगत बजट निर्णय	सागनिक भौमिक	42
21		भारत में खुशी और स्वतंत्रता	अर्चिता दत्ता	44
22		कपड़ा डिजाइन	स्निग्धा दत्ता	47
23		लॉकडाउन - मानव जीवन के लिए एक नया युग	संजय कुमार घोष	49
24		शतरंज	देबजानी मोहरार	50
25	काव्यांजलि	बोझ	भास्वती सिन्हा	52
26		एक बार झांक के देखो ना	इशान सिन्हा	53
27		एक सवाल	वरुण कुमार सिंह	54
28		काली घटा	नबनीता पॉल	55
29		अंतिम संस्कार	देवांगी चक्रबर्ती	56
30		वसंत	स्नेहा दास	56
31	गतिविधियाँ	क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता द्वारा 8वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन		57
32		18 और 19 फरवरी, 2023 को कलकत्ता क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा गरपंचकोट और अयोध्या पहाड़ क्षेत्र, पुरुलिया की भ्रमण यात्रा		58
33		दिनांक 24.03.2023 को स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन		59
34		हडको क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में 15 से 30 सितंबर 2022 तक राजभाषा पखवाड़ा का आयोजन		60
35		सतर्कता जागरूकता सप्ताह का पालन		62
36		कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा आउटरिच कार्यक्रम		64
37		दिनांक 25.02.2023 को नलबन फूड पार्क, कोलकाता में वार्षिक खेल दिवस का आयोजन		65
38		आजादी का अमृत महोत्सव के अवसर पर कोलकाता साल्ट लेक में हडको द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रम		66
39		हडको कोलकाता द्वारा 11.05.2022 को हडको का 52वां स्थापना दिवस समारोह		67
40	अन्य	कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय के पूर्व क्षेत्रीय प्रमुख / कार्यकारी निदेशक जिन्होंने क्षेत्रीय कार्यालय के विकास में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है		68
41		कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय में विगत 5 वर्षों के दौरान हमारे कर्मठ सेवानिवृत सहकर्मीगण		69
42		स्मरण		70
43		सरकारी / सार्वजनिक क्षेत्र के उधारकर्ताओं के लिए वित्तपोषण पद्धति		71

संदेश

कुलदीप नारायण
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता द्वारा अपनी गृह पत्रिका 'चिरई' के प्रथम एवं द्वितीय अंक के सफल प्रकाशन के पश्चात् तृतीय अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। हडको क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता द्वारा राजभाषा के प्रचार-प्रसार एवं प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु हिंदी पत्रिका का प्रकाशन किया जाना राजभाषा के उत्तरोत्तर विकास में अत्यन्त प्रशंसनीय प्रयास है।

आशा करता हूँ कि इस पत्रिका का प्रकाशन कार्यालय के संवैधानिक दायित्वों के निर्वाह की पूर्ति के साथ-साथ राजभाषा के प्रचार-प्रसार में भी सहयोगी सिद्ध होगा।

पश्चिम बंगाल तथा सिक्किम राज्य की समृद्ध संस्कृति के संदर्भ में पत्रिका के ज्ञानवर्द्धक लेख एवं हडको की कार्य प्रणाली का समावेश पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। पत्रिका के तृतीय अंक के सफल प्रकाशन के लिए सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

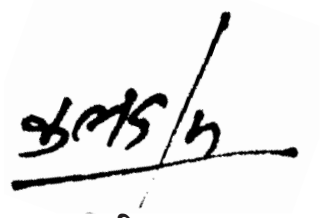

कुलदीप नारायण
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

"हिंदी का पौधा दक्षिणवालों ने त्याग से सींचा है।"
- शंकरराव कप्पीकेरी।

संदेश

एम. नागराज
निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग)

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता अपनी राजभाषा गृह पत्रिका 'चिरई' के तृतीय अंक का प्रकाशन कर रहा है। गृह पत्रिकाएं विषयों की प्रस्तुति मात्र ही नहीं वरन् भावी प्रगति की विकास का कार्य भी करती है।

राजभाषा के प्रतिपूर्ण समर्पण के साथ-साथ कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय, पश्चिम बंगाल तथा सिक्किम राज्य के विकास में कई वर्षों से विभिन्न योजनाओं में वित्तपोषण के माध्यम के साथ अहम भूमिका निभाते हुए पश्चिम बंगाल तथा सिक्किम राज्य के विकास में अपना अनुपम योगदान दे रहा है।

मैं कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय के सभी कार्मिकों तथा पत्रिका के संपादक मंडल को इस ज्ञानवर्द्धक पत्रिका के प्रकाशन के लिए बधाई देता हूँ।

एम. नागराज
निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग)

"अकबर से लेकर औरंगजेब तक मुगलों ने जिस देशभाषा का स्वागत किया वह ब्रजभाषा थी।" -रामचंद्र शुक्ल

संदेश

डी. गुहन
निदेशक (वित्त)

मुझे जानकर अत्यन्त प्रसन्नता है कि कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा अपनी राजभाषा गृह पत्रिका चिरई के तृतीय संस्करण का प्रकाशन किया जा रहा है। कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय राजभाषा के प्रयोग और कार्यान्वयन की दिशा में सदैव अग्रणी रहा है तथा इस क्रम में कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा हिंदी गृह पत्रिका 'चिरई' का प्रकाशन प्रशंसनीय है।

किसी भी कार्यालय की गृह पत्रिका कार्यालय के कार्यकलापों का दर्पण होती हैं, एवं राजभाषा माध्यम से इसका प्रस्तुतिकरण इसके प्रचार-प्रसार एवं प्रयोग को बढ़ाने में भी सहायक होता है। मैं आशा करता हूँ कि कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय की गृह पत्रिका अपने उद्देश्यों में सफलता प्राप्त करेगी।

शुभकामनाओं सहित।

17/4/2023

डी. गुहन
निदेशक (वित्त)

"राष्ट्रभाषा हिंदी का किसी क्षेत्रीय भाषा से कोई संघर्ष नहीं है।" - अनंत गोपाल शेवड़े।

संदेश

अरुण कुमार चतुर्वेदी
प्रमुख सतर्कता अधिकारी

मुझे जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता राजभाषा गृह पत्रिका चिरई का तृतीय संस्करण प्रकाशित करने जा रहा है। यह पत्रिका राजभाषा नीति के अनुपालन, कार्यान्वयन और प्रचार-प्रसार की दिशा में एक सराहनीय प्रयास है। इस पत्रिका के माध्यम से लेखन में रूचि रखने वाले सभी कार्मिकों को अपनी सृजनात्मक अभिव्यक्ति का अवसर मिलता है।

इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु क्षेत्रीय कार्यालय को हार्दिक शुभकामनाएं हैं।

अरुण कुमार चतुर्वेदी
प्रमुख सतर्कता अधिकारी

"हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है।" - वी. कृष्णस्वामी अय्यर

संदेश

डॉ. आलोक कुमार जोशी
कार्यकारी निदेशक (राजभाषा)

मुझे जानकर अत्यन्त प्रसन्नता है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता द्वारा राजभाषा गृह पत्रिका 'चिरई' के तृतीय संस्करण का प्रकाशन किया जा रहा है। गृह पत्रिकाओं के प्रकाशन से कर्मचारियों की मौलिक लेखन प्रतिभा का विकास होता है एवं राजभाषा के कार्यान्वयन तथा प्रचार-प्रसार की पृष्ठभूमि को भी महत्वपूर्ण आधार प्राप्त होता है। क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन तथा प्रचार-प्रसार हेतु किए जा रहे प्रयास अत्यन्त सराहनीय हैं।

पत्रिका के प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

डॉ. आलोक कुमार जोशी
कार्यकारी निदेशक (राजभाषा)

"राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिंदी ही जोड़ सकती है।"
- बालकृष्ण शर्मा नवीन

संदेश

सुरेन्द्र कुमार
महाप्रबंधक (परियोजना / राजभाषा)

कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय ने "चिरई" के तृतीय संस्करण का प्रकाशन कर राजभाषा नीति के प्रति अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह करते हुए हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु एक स्वागत योग्य प्रयास किया है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय के सभी कार्मिक इस पत्रिका से प्रेरित होकर राजभाषा हिन्दी के सरल और सहज रूप को दिन प्रतिदिन के सरकारी कामकाज में अपना कर हिन्दी के भविष्य को और उज्ज्वल बनाने में सराहनीय योगदान देंगे।

इस पत्रिका में लेख के माध्यम से महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले सभी कार्मिकों की मैं सराहना करता हूँ तथा क्षेत्रीय कार्यालय को इस पत्रिका के सफल प्रकाशन की बधाई देता हूँ। आशा करता हूँ कि भविष्य में भी यह सकारात्मक प्रयास जारी रहेगा।

शुभकामनाओं सहित।

सुरेन्द्र कुमार
महाप्रबंधक (परियोजना / राजभाषा)

संदेश

देबेश चक्रबर्ती
क्षेत्रीय प्रमुख (प्रभारी)

यह परम हर्ष का विषय है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता की हिंदी गृह पत्रिका "चिरई" का तीसरा संस्करण प्रकाशित होने जा रहा है।

राजभाषा से संबंधित सभी कार्यों में कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय को मार्गदर्शन करने के लिए सामान्य रूप से एवं हिंदी पत्रिका प्रकाशित करने में सहायता के लिए विशेष रूप से मैं हडको के हिंदी राजभाषा विभाग के आभारी हूँ।

मैं सभी स्टाफ सदस्यों का भी आभार व्यक्त करता हूं उनके लेख आदि के माध्यम से पर्याप्त योगदान के लिए। हिंदी पत्रिका "चिरई" का नियमित रूप से प्रकाशित करने में हडको क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता के हिंदी नोडल अधिकारी और हिंदी नोडल सहायक का महत्वपूर्ण भूमिका रहा है।

राजभाषा हिंदी में कार्य करना हमारा नैतिक कर्तव्य ही नहीं बल्कि संवैधानिक दायित्व भी है। हिंदी भाषा की प्रचार प्रसार में भारत सरकार के उद्देश्य को सफल करने के उपरांत हमें हिंदी पत्रिका प्रकाशित करने का अवसर देने के लिए हम हडको प्रबंधन के आभारी हैं।

मैं उन लोगों को भी धन्यवाद देना चाहता हूं जिन्होंने पूरे दिल से पहल की और इस हिंदी पत्रिका को प्रकाशित करने में योगदान दिया।

देबेश

देबेश चक्रबर्ती
क्षेत्रीय प्रमुख (प्रभारी)

"हिंदी को तुरंत शिक्षा का माध्यम बनाइये।" - बेरिस कल्यएव

संदेश

दीपंकर दत्ता
सहायक महाप्रबंधक (सचिवीय)
एवं हिंदी नोडल अधिकारी

अर्चिता दत्ता
उप प्रबंधक (वित्त)
एवं नोडल सहायक

लक्ष्य प्राप्ति एक विशिष्ट, वांछनीय लक्ष्य तक पहुँचने की प्रक्रिया है। लक्ष्य प्राप्ति के मुख्य घटक योजना, प्रयास और निष्पादन हैं। योजना में एक स्पष्ट दृष्टि बनाना शामिल है कि आप क्या हासिल करना चाहते हैं और एक योजना विकसित करना चाहते हैं। उपाय में आपके सपने को साकार करने के लिए आवश्यक कार्य करना शामिल है। निष्पादन में आपका लक्ष्य लेना, उसे क्रिया में बदलना और अपनी प्रगति की निगरानी करना शामिल है।

हमें यह घोषणा करते हुए खुशी हो रही है कि कड़ी मेहनत, समर्पण, लगन, प्रतिबद्धता के बाद, क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता अपना वांछित लक्ष्य तक पहुँच पाया है यानी हिंदी पत्राचार में न केवल 55% के लक्ष्य को पार कर लिया है बल्कि पिछले दो तिमाही में 70-75% तक पहुँच गया है। यह हमारे क्षेत्रीय प्रमुख (प्रभारी) श्री देबेश चक्रबर्ती की दृढ़ प्रतिबद्धता, समर्थन और प्रोत्साहन के कारण हो पाया। उनके मार्गदर्शन ने हमें लक्ष्य प्राप्ति की चुनौती का सामना करने का साहस दिया।

वर्ष 2019 कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय के लिए एक शानदार साल था, हमारी हिंदी गृह पत्रिका "चिरई" अपनी यात्रा शुरू की थी। "चिरई" का पहला संस्करण सितंबर, 2019 को प्रकाशित हुआ था। कोविड-19 महामारी के कारण कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय 2020 और 2021 की कोई भी हिंदी पत्रिका प्रकाशित नहीं कर सका। वर्ष 2022 में हडको क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता ने हिंदी पत्रिका "चिरई" का दूसरा संस्करण प्रकाशित किया।

मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि अपने पिछले अनुभव, मार्गदर्शन और शुभचिंतकों के प्रोत्साहन के साथ, हम कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय के हिंदी गृह पत्रिका "चिरई" का तृतीय संस्करण प्रकाशित करने जा रहा है। अपनी पत्रिका की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए, हमने बहुत प्रयास की है। यह हमारे सहयोगियों के सामूहिक समर्थन से हुआ है।

मुझे आशा है कि सम्मानित वरिष्ठ अधिकारी, सहकर्मी, पाठक के सहयोग से हम आगे भी एक उत्पादक, चुनौतीपूर्ण और सफल प्रकाशन कर पाएँगे। निरंतर सुधार की भावना में, हमारे अगले प्रकाशन को सुव्यवस्थित और गुणवत्ता-उन्मुख बनाने के लिए किसी भी रचनात्मक निवेश का अत्यधिक स्वागत है।

कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय की ओर से, हम सभी लेखकों, संरक्षकों और पाठकों को शुभकामनाएं देना चाहता हूँ।

दीपंकर दत्ता
हिंदी नोडल अधिकारी

अर्चिता दत्ता
हिंदी नोडल अधिकारी

> "देश को एक सूत्र में बाँधे रखने के लिए एक भाषा की आवश्यकता है।"
> - सेठ गोविंददास

कोलकाता क्षेत्र द्वारा हडको का प्रचालन

पश्चिम बंगाल और सिक्किम

देबेश चक्रबर्ती
क्षेत्रीय प्रमुख (प्रभारी)

कार्य: कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय ने 1984 में अपना कार्य आरंभ किया। वर्तमान में, यह सिक्किम और पश्चिम बंगाल में हडको के कार्यों का प्रबंधन कर रहा है। स्थापना के बाद से, हडको ने सिक्किम राज्य में 15904 आवास इकाइयों के निर्माण और चार बुनियादी संरचना परियोजनाओं के लिए 1188.92 करोड़ रुपये की ऋण राशि के साथ 42 योजनाओं को मंजूरी दी है। प्रमुख उधार लेने वाली एजेंसियां सिक्किम आवास और विकास बोर्ड और सिक्किम औद्योगिक विकास और निवेश निगम लिमिटेड हैं।

हडको ने पश्चिम बंगाल में 3215088 आवासीय इकाइयों के निर्माण और 47 बुनियादी संरचना परियोजनाओं के लिए 351175 करोड़ रुपये की ऋण राशि के साथ 336 परियोजनाओं को मंजूरी दी। राज्य में प्रमुख उधार लेने वाली एजेंसियां पश्चिम बंगाल आवास बोर्ड, कोलकाता महानगर विकास प्राधिकरण, कोलकाता नगर निगम और अन्य शहरी स्थानीय निकाय, राज्य शहरी विकास एजेंसी और राज्य सार्वजनिक क्षेत्र की एजेंसियां हैं।

कंसल्टेंसी: हडको ने कई परामर्शी परियोजनाएँ शुरू की हैं। सिक्किम की कुछ प्रमुख परियोजनाओं में नामची में तीर्थ-सह-सांस्कृतिक केंद्र का निर्माण, सिंगतम में भूकंप पीड़ितों का पुनर्वास और गंगटोक शहर के लिए आरएवाई के तहत स्लम फ्री सिटी प्लान तैयार करना शामिल है। पश्चिम बंगाल के जलपाईगुड़ी में किफायती आवास की प्लानिंग, डिजाइनिंग, आकलन और निर्माण की परियोजनाएँ आरंभ की गई है और जयगांव टाउन में लैंडयूज एंड डेवलपमेंट कंट्रोल प्लान (एलयूडीसीपी) परियोजनाए आरंभ की

सीएसआर परियोजनाएँ: हडको सीएसआर असिस्टेंस द्वारा सिंगतम में आपदा पुनर्वास कार्यों, तिब्बत रोड, गंगटोक में मोची शेड और शौचालय परिसर के निर्माण, सिक्किम के नामची में सिद्धेश्वर धाम (चार धाम) परिसर के जीर्णोद्धार, नवीकरण और संचालन और रखरखाव और कोलकाता के विभिन्न स्थानों पर

"समूचे राष्ट्र को एकताबद्ध और दृढ़ करने के लिए हिन्द भाषी जाति की एकता आवश्यक है।" - रामविलास शर्मा

रैन बसेरों, देशप्रिय पार्क, कोलकाता में और उसके आसपास सौर आधारित प्रकाश प्रणालियों की आपूर्ति और स्थापना संबंधी कार्य किए गए।

प्रधानमंत्री आवास योजना :

पीएमएवाई-सीएलएसएस : पीएमएवाई (यू) के सीएलएसएस वर्टिकल के तहत, हडको ने केंद्रीय नोडल एजेंसी के रूप में पश्चिम बंगाल में 66.17 करोड़ रुपये के 2771 लाभार्थियों (वित्त वर्ष - 2022-23 828 लाभार्थियों को 20.41 करोड़ रुपये) और 0.07 करोड़ रुपये के 3 लाभार्थियों को सिक्किम में कई प्राथमिक ऋण संस्थानों के माध्यम से सब्सिडी दी है।

पीएमएवाई-बीएलसी और एएचपी : क्षेत्रीय कार्यालय ने 2021-22 तक 1006.14 करोड़ रुपये की केंद्रीय सब्सिडी के साथ 67076 इकाइयों को कवर करने वाले 23 प्रस्तावों के संबंध में पीएमएवाई-एचएफए (यू) की डीपीआर और साइट जांच की।

प्रशिक्षण : हडको ने एटीआई, कोलकाता के सहयोग से शहरी आवास, पीएमएवाई-एचएफए, राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन, लागत प्रभावी प्रौद्योगिकियों आदि पर विभिन्न शहरी स्थानीय निकायों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए।

वित्तीय वर्ष 2022-23 के दौरान क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता ने विद्युत और सामाजिक अवसंरचना और आवास/टाउनशिप को कवर करते हुए 166.11 करोड़ रुपये की ऋण राशि वाली 3 योजनाओं को मंजूरी दी है। उधार लेने वाली एजेंसियां डब्ल्यूबीएसईडीसीएल और डब्ल्यूबीपीडीसीएल हैं। वर्ष के दौरान क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता मैसर्स रोचिटा टावर्स एंड एस्टेट्स प्राइवेट लिमिटेड की संपत्ति से संबंधित सरफेसी के तहत ई-नीलामी के माध्यम से 15.48 करोड़ रुपये के चूक/एनपीए का समाधान कर सकता है।

वर्ष के दौरान सीएसआर गतिविधियों के तहत, क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता ने आईपीजीएमईआर, कोलकाता में चिकित्सा उपकरण और बुनियादी ढांचे के विकास की खरीद के लिए पश्चिम बंगाल राज्य स्वास्थ्य और परिवार कल्याण समिति, स्वास्थ्य विभाग सरकार को 93.93 लाख रुपये की 1 सीएसआर योजना मंजूर की है। क्षेत्रीय कार्यालय ने 29357 करोड़ रुपये की परियोजना लागत और 600 लाख रुपये का शुल्क बढ़ाने वाली 3 परियोजनाओं के संबंध में पीएमएवाई-एचएफए (यू) की डीपीआर और साइट संवीक्षा की। इसके अलावा, भवन की मरम्मत और रखरखाव के साथ हडको संपत्ति के मुद्रीकरण में प्रगति हुई है।

> "हिंदी का शासकीय प्रशासकीय क्षेत्रों से प्रचार न किया गया तो भविष्य अंधकारमय हो सकता है।" - विनयमोहन शर्मा

पश्चिम बंगाल और सिक्किम में हडको द्वारा वित्तपोषित योजनाओं की झलक

"संस्कृत के अपरिमित कोश से हिंदी शब्दों की सब कठिनाइयाँ सरलता से हल कर लेगी।" - राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन

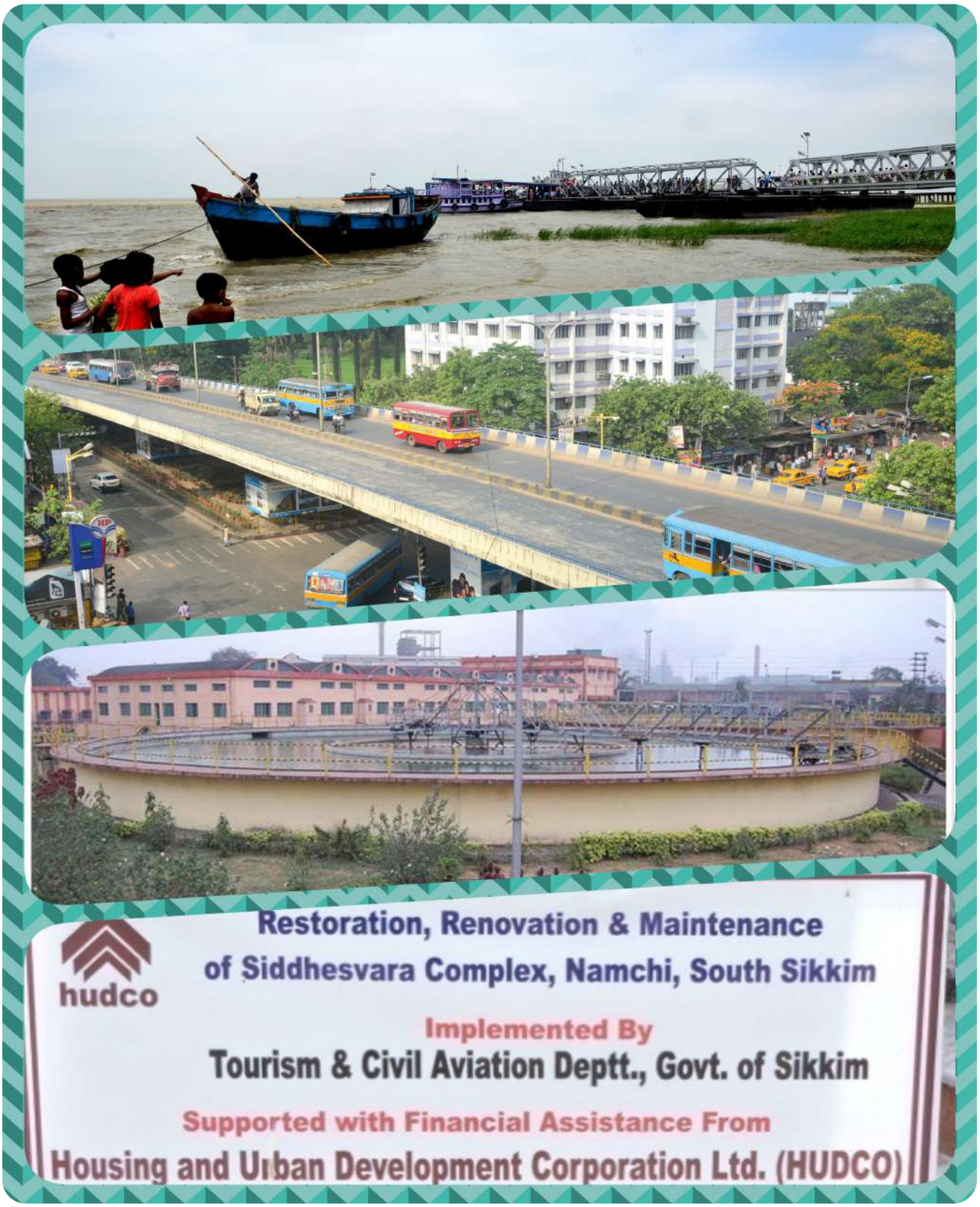

> "भारत के विभिन्न प्रदेशों के बीच हिंदी प्रचार द्वारा एकता स्थापित करने वाले सच्चे भारत बंधु हैं।" - अरविंद

"हिंदी राष्ट्रभाषा है, इसलिये प्रत्येक व्यक्ति को, प्रत्येक भारतवासी को इसे सीखना चाहिए।" - रविशंकर शुक्ल

व्यवसाय सृजनः राज्य/एजेंसी पदाधिकारियों के साथ बैठक

14.09.2022 को नबन्ना में एक राज्य स्तरीय व्यावसायिक बैठक आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता डॉ. मनोज पंत, आईएएस, अतिरिक्त मुख्य सचिव, वित्त, योजना और सांख्यिकी विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार ने की, जहाँ हडको के कॉर्पोरेट कार्यालय के अधिकारी अर्थात् श्री डी. गुहन, निदेशक (वित्त) और डॉ. आलोक कुमार जोशी, कार्यकारी निदेशक (संचालन) सहित क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता के अधिकारी उपस्थित थे। बैठक के दौरान वित्त, बिजली, लोक निर्माण, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी और शहरी विकास एवं नगरपालिका मामलों के विभागों के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे। यह बैठक पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा हडको की वित्तीय सहायता प्राप्त करने की संभावना का पता लगाने के लिए आयोजित की गई थी। बैठक के दौरान, हडको के अधिकारियों ने विभिन्न राज्य सरकारों और उनकी एजेंसियों द्वारा अपनाई गई नवीन वसूली और पुनर्भुगतान तंत्र के साथ आवास और बुनियादी ढांचा योजना के वित्तपोषण के विभिन्न मॉडलों पर विचार-विमर्श किया।

श्री देबेश चक्रबर्ती, क्षेत्रीय प्रमुख और कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने माननीय मंत्रियों, सचिवों और पश्चिम बंगाल राज्य सरकार और राज्य-पैरास्टेटल एजेंसियों और शहरी स्थानीय निकायों सहित सिक्किम सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों से मुलाकात की है। बैठक के दौरान, हाउसिंग और इन्फ्रास्ट्रक्चर के वित्त पोषण में हडको के अनुभव को साझा किया गया और प्रतिस्पर्धी ब्याज दर और पारस्परिक रूप से स्वीकार्य नियमों और शर्तों में हडको ऋण प्राप्त करने का अनुरोध किया गया।

एसीएस, वित्त की अध्यक्षता में राज्य व्यापार बैठक

डॉ. मनोज पंत, आईएएस, पश्चिम बंगाल सरकार के अतिरिक्त मुख्य सचिव, वित्त, योजना और सांख्यिकी विभागों और अन्य राज्य अधिकारियों के साथ बैठक, श्री डी. गुहन, डीएफ और डॉ. आलोक कुमार जोशी, ईडीओ सहित आरओ के अधिकारी उपस्थित थे।

> "जिस राष्ट्र की जो भाषा है उसे हटाकर दूसरे देश की भाषा को सारी जनता पर नहीं थोपा जा सकता - वासुदेवशरण अग्रवाल

एसीएस, वित्त की अध्यक्षता में राज्य व्यापार बैठक

श्री फिरहाद हाकिम, माननीय प्रभारी मंत्री, शहरी विकास और नगरपालिका मामलों के विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार और माननीय मेयर, कोलकाता नगर निगम और अध्यक्ष, कोलकाता महानगर विकास प्राधिकरण के साथ बैठक

श्रीमती चंद्रिमा भट्टाचार्य माननीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), वित्त विभाग और माननीय राज्य मंत्री, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, भूमि और भूमि सुधार और शरणार्थी, राहत और पुनर्वास, योजना और सांख्यिकी विभाग, पश्चिम सरकार के साथ बैठक बंगाल

श्री मलय घटक, माननीय प्रभारी मंत्री, लोक निर्माण, कानून और न्यायिक विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार के साथ बैठक

श्री बेचाराम मन्ना, माननीय राज्य मंत्री, पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग और माननीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रम विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार के साथ बैठक।

"जिस देश को अपनी भाषा और अपने साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।" - देशरत्न डॉ. राजेन्द्रप्रसाद

श्री फरहाद हकीम, माननीय मंत्री, शहरी विकास और नगरपालिका मामलों के मंत्री, पश्चिम बंगाल सरकार और माननीय मेयर, कोलकाता नगर निगम के साथ बैठक

डॉ. पी उलगनाथन, आईएएस (बैच 2006), सचिव, पंचायत और ग्रामीण विकास विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार के साथ बैठक

सुश्री अंतरा आचार्य, आईएएस (बैच 2006), प्रधान सचिव, पश्चिम बंगाल सरकार, लोक निर्माण विभाग के साथ बैठक

डॉ. मनोज पंत, आईएएस (बैच 1991), अतिरिक्त मुख्य सचिव, पश्चिम बंगाल सरकार, वित्त, योजना और सांख्यिकी विभाग के साथ बैठक

डॉ. एस के सिन्हा, आईएएस, सचिव, वित्त, पश्चिम बंगाल सरकार के साथ बैठक

श्री एम धर, विशेष सचिव, वित्त, पश्चिम बंगाल सरकार और एमडी (डब्ल्यूबीआईडीएफसीएल) के साथ बैठक

श्री टी पी शांगदेरपा, प्रधान मुख्य अभियंता-सह-सचिव, सड़क और पुल विभाग, सिक्किम सरकार के साथ बैठक

श्री वी.बी. पाठक, आईएएस, मुख्य सचिव और सचिव, वित्त, राजस्व और व्यय विभाग, सिक्किम सरकार

"मैं राष्ट्र का प्रेम, राष्ट्र के भिन्न-भिन्न लोगों का प्रेम और राष्ट्रभाषा का प्रेम, इसमें कुछ भी फर्क नहीं देखता।" - र. रा. दिवाकर

श्री प्रकाश छेत्री, आयुक्त और सचिव, पर्यटन और नागरिक उड्डयन विभाग, सिक्किम सरकार के साथ बैठक

कोलकाता में पश्चिम बंगाल सरकार के सचिव, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण विभाग के साथ व्यापार बैठक

श्री शिवाजी घोष, आईपीएस (सेवानिवृत्त) (बैच 1985), अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, पश्चिम बंगाल पुलिस हाउसिंग एंड इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट कॉरपोरेशन के साथ बैठक

दिनांक 07.07.2022 को डॉ. राजेश कुमार, आईपीएस (बैच 1990), सदस्य सचिव, पश्चिम बंगाल प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के साथ बैठक

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में श्री सोनम दादुल भूटिया, सचिव, सिक्किम आवास और विकास बोर्ड के साथ बैठक

डॉ. पी.बी. सलीम, आईएएस (बैच 2001), सीएमडी, पश्चिम बंगाल विद्युत विकास निगम लिमिटेड और सचिव, सीएमओ, पश्चिम बंगाल के साथ बैठक

श्री विभु गोयल, आईएएस (बैच 2012), निदेशक (वित्त), पश्चिम बंगाल राजमार्ग विकास निगम लिमिटेड और परियोजना निदेशक, कोलकाता पर्यावरण सुधार निवेश कार्यक्रम, पश्चिम बंगाल सरकार के साथ बैठक

श्री दीपक कुमार साहा, निदेशक (एफएंडए), पश्चिम बंगाल स्टेट इलेक्ट्रिसिटी ट्रांसमिशन कंपनी लिमिटेड (डब्ल्यूबीएसईटीसीएल) के साथ बैठक

"किसी राष्ट्र की राजभाषा वही भाषा हो सकती है जिसे उसके अधि-काधिक निवासी समझ सके।" - (आचार्य) चतुरसेन शास्त्री

श्री एच.पी. खरेयल, प्रबंध निदेशक, सिडिको

श्री सम्राट राही, आईआरएस, उपाध्यक्ष श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट, कोलकाता (पूर्व में कोलकाता पोर्ट ट्रस्ट) के साथ बैठक

श्री अरूप सरकार, सदस्य वित्त, दामोदर घाटी निगम (डीवीसी) के साथ बैठक

श्री सुभा रंजन, दास, आईएएस और कार्यकारी निदेशक, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग

> "साहित्य के इतिहास में काल विभाजन के लिए तत्कालीन प्रवृत्तियों को ही मानना न्यायसंगत है।" - अंबाप्रसाद सुमन

सुपर फूड बाजरा

प्रशांत कुमार कुवंर
संयुक्त महाप्रबंधक (परियोजना)

भारत के प्रस्ताव के बाद संयुक्त राष्ट्र द्वारा वर्ष 2023 को "अंतर्राष्ट्रीय बाजरा वर्ष" घोषित किया गया है। हमारे माननीय प्रधान मंत्री के नेतृत्व में भारत इस "बाजरा मिशन" की शुरुआत कर रहा है और 72 देश इस मिशन में भाग ले रहे हैं।

"क्यों भारत इन पोषक अनाजों को खाने की मेज पर वापस लाने के लिए दुनिया पर जोर दे रहा है ?

भारत को दुनिया का बाजरा हब माना जाता है क्योंकि एशियाई देशों में गेहूँ के कुल उत्पादन का 80% भारत द्वारा आपूर्ति किया जाता है। वैश्विक परिदृश्य में भारत कुल वैश्विक उत्पादन का 20% प्रदान करता है। बाजरा जलवायु के अनुकूल फसलें हैं और बहुत पौष्टिक हैं। वे कम वर्षा के साथ अत्यधिक और कठोर जलवायु में विकसित हो सकते हैं। उन्हें प्रसंस्करण में 40% कम ऊर्जा की आवश्यकता होती है और वे गेहूँ के आधे समय में बढ़ते हैं।

एफएओ (संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन) की एक रिपोर्ट के मुताबिक - "वैश्विक कृषि खाद्य प्रणाली को बढ़ती आबादी को खिलाने के लिए चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, बाजरा जैसे लचीला अनाज एक किफायती और पौष्टिक विकल्प प्रदान करते हैं और प्रयासों को बढ़ावा देने के लिए प्रयास किए जाने की आवश्यकता है उनकी खेती। "2019-2020 के बीच एशिया में स्वस्थ आहार की लागत में सबसे अधिक 4% की वृद्धि देखी गई, जिसके परिणामस्वरूप लगभग 3.1 बिलियन लोग 2020 में स्वस्थ आहार नहीं ले सके। हरित क्रांति से पहले चावल और बाजरा का उत्पादन होता है गेहूँ से ऊँचा। कुछ दशकों के बाद बाजरा का उत्पादन गिर गया। इसलिए, इस बाजरा मिशन का मुख्य उद्देश्य कृषि आय को स्थिर करना या बढ़ाना और मुख्य खाद्य पदार्थों की पर्याप्त आपूर्ति सुनिश्चित करना है, सरकार स्वस्थ आहार के लिए आवश्यक उनके भोजन के

"समाज के अभाव में आदमी की आदमियत की कल्पना नहीं की जा सकती।"- पं. सुधाकर पांडेय

उत्पादन को भी निरुत्साहित कर सकती है।

बाजरा नट्रिया-अनाज अनाज परिवार से संबंधित है जैसे चावल और गेहूं का बाहरी आवरण खुरदरा होता है। वे स्थूल पोषक तत्वों के साथ-साथ सूक्ष्म पोषक तत्वों जैसे कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, आयरन, कैल्शियम, मैग्नीशियम, विटामिन बी आदि दोनों के पोषक तत्वों के पावर हाउस हैं। यह एंटीऑक्सिडेंट और आहार फाइबर से भरा हुआ है। भारतीय बाजरा अनुसंधान संस्थान ने बाजरा पर पूर्ण शोध किया और बाजरा के बारे में जानकारी प्रदान की। दरअसल, चावल और गेहूं ही ऐसे दो अनाज हैं जिनका हम ज्यादातर सेवन कर रहे हैं। आहार में विभिन्न अनाजों को शामिल करना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि वे हमें विभिन्न स्रोतों से विभिन्न पोषक तत्व प्रदान करते हैं। कैलोरी, कार्बोहाइड्रेट और वसा के मामले में बाजरा चावल और गेहूं के समान ही होते हैं। लेकिन बाजरा में अधिक प्रोटीन और अन्य पोषक तत्व होते हैं। बाजरा को न्यूट्रास्यूटिकल्स का दर्जा दिया जाता है जो अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए नियमित अनाज और अनाज की तुलना में अधिक स्वास्थ्य लाभ देता है। इनमें पाए जाने वाले एंटीऑक्सीडेंट की तुलना फलों और सब्जियों और ग्रीन टी से की जा सकती है। कीमत के लिहाज से बाजरा काफी सस्ता होता है और इसे गरीब आदमी का भोजन कहा जाता है। सरकार का उद्देश्य स्कूल के मध्याह्न भोजन, आंगनवाड़ी केंद्रों, छात्रावास के मेनू, रेस्तरां के मेनू और यहां तक कि संसद की कैंटीनों और मंत्रिमंडलों में इसका अधिकतम लाभ प्राप्त करने और इसे लोकप्रिय बनाने के लिए बाजरा आधारित व्यंजन का एक भोजन देना है। लेकिन बाजरे को बनाने से पहले 4-6 घंटे के लिए पानी में भिगो देना चाहिए. क्योंकि अनाज की बाहरी सतह में फाइटेट यौगिक होते हैं जो एक एंटीन्यूट्रिएंट के रूप में कार्य करते हैं जो शरीर में पोषक तत्वों के अवशोषण को रोकता है। भिगोने से पोषक तत्वों के अवशोषण में मदद मिलती है।

'सुपर फूड' पर सरकार का दांव

- 41% मिलेट्स उत्पादन के साथ भारत दुनिया में सबसे अव्वल
- 16 तरह के मिलेट्स का भारत में होता है उत्पादन इनमें ज्वार, बाजरा, रागी, सावां, कंगनी आदि शामिल
- 01 प्रतिशत उत्पादित बाजरे का ही वर्तमान में हो पाता है निर्यात
- 05 प्रमुख बाजरा उत्पादक राज्यों में राजस्थान, महाराष्ट्र, कर्नाटक, गुजरात व एमपी प्रमुख
- 12 अरब डॉलर के बाजरे का वर्ष 2025 तक देश में उत्पादन होने का अनुमान

भारत में बाजरा की विभिन्न किस्में उपलब्ध हैं। इनमें प्रमुख रूप से हैं

1. ज्वार : वे ज्यादातर भारत के उत्तरी भाग, उत्तर प्रदेश, पंजाब, महाराष्ट्र, मध्य भारत और मध्य प्रदेश में उगते हैं। इनका शरीर पर ठंडा प्रभाव पड़ता है और गर्मी के दिनों में इन्हें विशेष रूप से खाया जाता है। ये ग्लूटेन फ्री होते हैं। इसलिए गेहूं असहिष्णुता या लस प्रतिरोध वाले लोग या सीलिएक रोग वाले रोगी बिना किसी डर के खा सकते हैं। इसे रोटी या भाकरी बनाने के लिए करी, दलिया के साथ चावल के रूप में लिया जा सकता है (ज्वार का आटा + गेहूं का आटा 1:1 के अनुपात में)

2. बाजरा : यह महाराष्ट्र, गुजरात और राजस्थान के क्षेत्र में पाया जाता है। यह प्रोटीन (10-15%) का एक समृद्ध स्रोत है। इसका ताप प्रभाव होता है जो सर्दियों के दौरान शरीर को गर्म रखता है। इसे रोटी, भाकरी, पैनकेक, मालपुआ आदि बनाने के लिए आटे के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है।

3. रागी : यह कर्नाटक में उगाई जाती है। रागी पोषक तत्वों का पावर हाउस है और इसे सुपर फूड कहा जाता है। रागी में 12% प्रोटीन होता है। मेथिओनिन और लाइसिन की उपस्थिति के कारण, यह त्वचा के लिए अच्छा होता है जो झुर्रियों और ढीलेपन को रोकता है। रागी के विटामिन डी और कैल्शियम का संयोजन बच्चों के साथ-साथ बुजुर्गों के लिए भी शरीर के हड्डियों के स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है। रागी बच्चों और बच्चों के मस्तिष्क के विकास में मदद करता है। यह युवाओं की त्वचा और बालों के लिए भी अच्छा है। रागी का उपयोग लड्डू, खीर, आटा, इडली, रोटी दलिया, खिचड़ी आदि बनाने में किया जा सकता है।

> "तुलसी, कबीर, नानक ने जो लिखा है, उसे मैं पढ़ता हूँ तो कोई मुश्किल नहीं आती।" - मौलाना मुहम्मद अली

4. फॉक्सटेल बाजरा : यह भारत के उत्तरी भाग में उगता है। इसमें रक्त शर्करा संतुलन स्वस्थ कार्बोहाइड्रेट होता है। यह रक्त कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करता है और शरीर में एचडीएल कोलेस्ट्रॉल के स्तर को बढ़ाता है। इसमें मौजूद आयरन और कैल्शियम की मात्रा भी रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करने में मदद करती है। यह विटामिन बी-थायमिन तंत्रिका तंत्र, तंत्रिका संबंधी विकार जैसे अल्जीमर, पार्किंसंस आदि के लिए अच्छा है।

5. बार्नयार्ड बाजरा : उत्तरांचल में पाई जाती है। यह उपवास के दौरान बहुत लोकप्रिय है और चावल और गेहूं के विकल्प के रूप में प्रयोग किया जाता है। यह चावल और रोटी की समान मात्रा की तुलना में कम कैलोरी वाला होता है और इसका पूर्ण प्रभाव और स्फूर्ति देता है। वजन घटाने के लिए यह सबसे अच्छा है। यह आयरन का बेहतरीन स्रोत है। इसे पुलाव, फ्राइड राइस, खीर आदि के रूप में ले सकते हैंHealth

फ़ायदे

विभिन्न पोषक तत्वों की उपस्थिति के कारण बाजरा पुरानी बीमारियों को रोकने के लिए उत्कृष्ट है---

1. बाजरा रक्त शर्करा के स्तर को कम करता है: चूंकि बाजरा में बहुत अधिक फाइबर और कम कैलोरी होती है, इसलिए इसका ग्लाइसेमिक इंडेक्स कम होता है। इसलिए नियमित रूप से बाजरे का सेवन करने से मधुमेह होने का खतरा कम होता है।

2. बाजरा वजन घटाने में मदद करता है: बाजरा वजन घटाने के लिए एक बेहतरीन विकल्प है क्योंकि इनमें कैलोरी कम और फाइबर अधिक होता है। यह उन लोगों को भी फायदा पहुंचाता है जो अपनी फिटनेस के प्रति सचेत रहते हैं। यह उन्हें खुद को लगातार ईंधन भरने के लिए खाने के बिना पूरे दिन अपने ऊर्जा स्तर को बनाए रखने में मदद करता है।

3. बाजरा हृदय रोगों को कम करता है: बाजरा में मौजूद आवश्यक फैटी एसिड कार्डियो वैस्कुलर रोगों को रोकने में मदद करता है। बाजरा अपने उच्च फाइबर सामग्री के कारण प्रभावी रूप से उच्च कोलेस्ट्रॉल के जोखिम को कम करता है।

4. बाजरा पाचन में मदद करता है: बाजरा आंतों की कार्यक्षमता को बढ़ाता है। हमारी आंत में असंख्य सूक्ष्म वनस्पति और जीव हैं, उनमें से कुछ उपयोगी बैक्टीरिया हैं। बाजरा में मौजूद फाइबर इन उपयोगी के लिए एक मेजबान के रूप में कार्य करता है और उन्हें आश्रय प्रदान करता है। ये बैक्टीरिया शरीर के पाचन में सुधार करते हैं और हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं। यह कब्ज, कोलन और पेट के कैंसर से बचाता है।

5. दमा और माइग्रेन से बचाता है बाजरा: इसमें गेहूं की तरह कोई एलर्जेंट नहीं होता है. इसलिए यह अस्थमा और घरघराहट के लिए अच्छा है। बाजरे की मैग्नीशियम सामग्री माइग्रेन की घटना को कम करने में मदद करती है।

6. बाजरा सीलिएक रोग के लिए अच्छा है: चूंकि बाजरा लस मुक्त होते हैं, इसलिए वे लस मुक्त आहार के लिए स्वस्थ और पौष्टिक विकल्प हैं।

7. बाजरा एक एंटीऑक्सिडेंट के रूप में कार्य करता है: बाजरा एंटीऑक्सिडेंट जैसे केरसेटिन, करक्यूमिन, एलाजिक एसिड और अन्य महत्वपूर्ण कैटेचिन से भरे होते हैं जो शरीर को मुक्त कणों से होने वाले नुकसान से लड़ने में मदद करते हैं जो विभिन्न अपक्षयी रोगों का कारण बनता है।

इस सुपरफूड (बाजरे) के इन स्वास्थ्य लाभों को देखते हुए इसका अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए इसे अपने नियमित आहार में शामिल करना चाहिए। स्वस्थ जीवन को बनाए रखने के लिए आहार और नियमित व्यायाम दोनों ही जरूरी हैं।

जलवायु परिवर्तन

जयंत कुमार दे
प्रबंधक (वित्त)

दुनिया भर में, अत्यधिक संवेदनशील लोग और पारिस्थितिक तंत्र पहले से ही जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के अनुकूल होने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। कुछ के लिए, ये सीमाएँ "नरम" हैं - प्रभावी अनुकूलन उपाय मौजूद हैं, लेकिन आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक बाधाएँ कार्यान्वयन को बाधित करती हैं, जैसे कि तकनीकी सहायता की कमी या अपर्याप्त धन जो उन समुदायों तक नहीं पहुँच पाता जहाँ इसकी सबसे अधिक आवश्यकता होती है। लेकिन अन्य क्षेत्रों में, लोग और पारिस्थितिक तंत्र पहले से ही अनुकूलन के लिए "कठोर" सीमा का सामना कर रहे हैं या तेजी से आ रहे हैं, जहां ग्लोबल वार्मिंग के 1.1 डिग्री सेल्सियस (2 डिग्री एफ) से जलवायु के प्रभाव इतने लगातार और गंभीर होते जा रहे हैं कि कोई भी मौजूदा अनुकूलन रणनीति पूरी तरह से बच नहीं सकती है नुकसान और नुकसान। उदाहरण के लिए, उष्ण कटिबंध में तटीय समुदायों ने संपूर्ण प्रवाल भित्ति प्रणालियों को देखा है जो एक बार उनकी आजीविका और खाद्य सुरक्षा का समर्थन करते थे, व्यापक मृत्यु दर का अनुभव करते थे, जबकि समुद्र के बढ़ते स्तर ने अन्य निचले इलाकों को उच्च भूमि पर जाने और सांस्कृतिक स्थलों को छोड़ने के लिए मजबूर किया है।

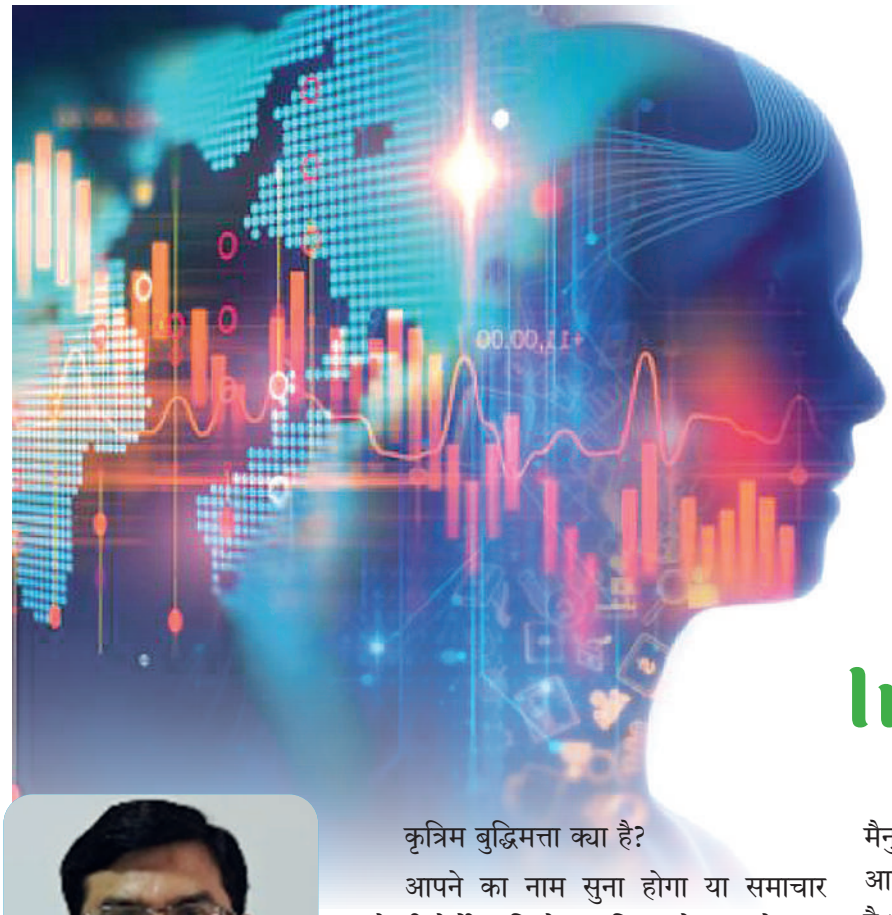

कृत्रिम बुद्धिमत्ता या Artificial Intelligence

विक्टर भट्टाचार्जी
संयुक्त महाप्रबंधक (आई टी)

कृत्रिम बुद्धिमत्ता क्या है?

आपने का नाम सुना होगा या समाचार पत्रों, रिपोर्टों आदि में इस विषय में पढ़ा होगा।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता या एक अद्धययन तथा प्रक्रिया है जिसमें कंप्यूटरों के माध्यम से वे कार्य करवाये जाते हैं जो कार्य मनुष्य अपनी बुद्धि का प्रयोग करते हुए करता हैं। इसमें कंप्यूटरों को बुद्धिमत्ता प्रदान की जाती है ताकि वे मनुष्य की भांति सोच सकें व कार्य कर सकें व कार्य कर सकें। बुद्धिमत्ता के लिए तर्क की क्षमता की आवश्यकता होती है। इसके लिए विभिन्न विषयों में न केवल बहुत अधिक ज्ञान की आवश्यकता होती है बल्कि इस ज्ञान को प्रयोग में लाकर विभिन्न समस्याओं का समाधान करने के लिए इन प्रणालियों की आवश्यकता होती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आज प्रयोगशाला से बाहर निकलकर मानव जीवन का अंग बन गयी है। कंप्यूटर/मोबाइल गेम्स से लेकर शिक्षा, कृषि, चिकित्सा शास्त्र, प्रौद्योगिकी, डिजाइनिंग, मैनुफैक्चरिंग, रिपेयरिंग, व्यवसाय, कानून, वित्त आदि क्षेत्र में इसका व्यापक रूप से प्रयोग हो रहा है। एआई तकनीक का समाज, अर्थव्यवस्था और व्यापार पर भारी प्रभाव पड़ने वाला है।

एआई के प्रकार

विजन एआई

- दस्तावेजों, छवियों या वीडियो से जानकारी उत्पन्न करता है।
- सेंसर, कैमरा, तंत्रिका नेटवर्क और एल्गोरिदम का उपयोग करता है।
- चेहरे की पहचान, वस्तु पहचान आदि में प्रयोग आता है।

संवादी एआई

- ध्वनि-आधारित और पाठ आधारित वार्तालाप करने में सक्षम।
- तुरन्त जानकारी उत्पन्न करने में सक्षम।
- एप्लिकेशन चैटबॉट, वर्चुअल असिस्टेंट आदि इसके उदाहरण है।

सेंस एआई

- मानवीय भावनाओं, भावों, वाणी से जानकारी निकालने में सक्षम।
- सेंसर और हार्डवेयर का उपयोग करके डाटा एकत्र करता है और उसका विश्लेषण करता है।
- स्मार्ट होम डिवाइस आदि इसके उदाहरण है।

निर्णय एआई

- एमएल और एल्गोरिदम का उपयोग करके सटीक निर्णय लेना।
- इंसानों की तरह तर्क करने और भविष्यवाणी करने की क्षमता।
- आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन स्वास्थ्य देखभाल आदि में काम आता है।

रोजगार के अवसर

एआई ने नौकरी के अवसर भी खोलें हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार हेल्थकेयर क्षेत्र, क्लिनिकल डेटा एनालिस्ट और मेडिकल इमेजिंग स्पेशलिस्ट जैसी भूमिकाओं की तलाश में है, बैंकिंग और वित्त क्षेत्र, चैटबॉट डेवलपर, धोखाधड़ी विश्लेषक और क्रेडिट जोखिम विश्लेषक की खोज में है। मैन्युफैक्चरिंग क्षेत्र को इंडस्ट्रियल डेटा साइंटिस्ट, प्रोसेस ऑटोमेशन स्पेशलिस्ट, प्रेडिक्टिव मेंटेनेंस इंजीनियर जैसी भूमिकाओं की जरूरत है। रिटेल क्षेत्र को रिटेल डेटा एनालिस्ट, आई टी प्रोसेस मॉडलर जैसी प्रोफेशनल चाहिए।

एआई के फायदे और नुकसान

फायदे

- एआई दोहराए जाने वाले कार्यों को स्वचालित करता है।
- एआई मानवीय त्रुटि को कम करता है।
- एआई हमें बेहतर निर्णय लेने में मदद करता है।
- एआई हमें और अधिक उत्पादक बनाता है।
- एआई समस्याओं को उन तरीकों से हल करता है जो हम नहीं कर सकते।
- एआई 24 घंटे काम करने में सक्षम है।

नुकसान

- एआई को बहुत सारे डेटा की जरूरत होती है।
- एआई महंगा हो सकता है।
- एआई खराब निर्णय ले सकता है।
- एआई नौकरियों को नष्ट कर सकता है।
- एआई मनुष्य को आलसी बना सकता है।
- एआई मनुष्य को आवेगरहित बना सकता है।

निष्कर्ष

एआई निस्संदेह एक ट्रेंडिंग और उभरती हुई तकनीक है। यह दिन-ब-दिन बहुत तेजी से बढ़ रहा है, और यह मशीनों को मानव मस्तिष्क की नकल करने में सक्षम बना रहा है। दुनिया भर में बहुत से लोग अभी भी इसे एक जोखिम भरी तकनीक के रूप में सोच रहे है, क्योंकि उन्हें लगता है कि अगर यह इंसानों से आगे निकल गया, तो यह मानवता के लिए खतरनाक होगा। हालाँकि, एआई का दिन-प्रतिदिन विकास इसे एक बेहतर तकनीक बना रहा है, और लोग इससे अधिक से अधिक जुड़ रहे हैं। इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि यह एक महान तकनीक है, लेकिन बिना किसी नुकसान के प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए प्रत्येक तकनीक का सीमित एवं नियंत्रित तरीके से उपयोग किया जाना आवश्यक है।

हरित वित्त - वैश्विक और भारतीय परिप्रेक्ष्य पर एक अद्यतन

रिसव चक्रबर्ती
सुपुत्र श्री देबेश चक्रबर्ती
क्षेत्रीय प्रमुख (प्रभारी)

हरित वित्त पोषण का एक रूप है जो सतत विकास और पर्यावरण संरक्षण का समर्थन करता है। इसका उद्देश्य उन परियोजनाओं और गतिविधियों में निवेश को बढ़ावा देना है जो पर्यावरण पर आर्थिक गतिविधियों के प्रभाव को कम करते हैं, जैसे नवीकरणीय ऊर्जा, ऊर्जा दक्षता, स्वच्छ परिवहन और अपशिष्ट प्रबंधन। जलवायु परिवर्तन को कम करने, जैव विविधता के संरक्षण और सतत विकास को प्राप्त करने में हरित वित्त एक महत्वपूर्ण उपकरण है। इसमें वित्तीय संस्थान और बाजार शामिल हैं जो अपने निवेश निर्णयों में पर्यावरण, सामाजिक और शासन (ESG) मानदंडों को एकीकृत करते हैं, और निम्न-कार्बन, स्थायी अर्थव्यवस्था में परिवर्तन का समर्थन करते हैं।

हरित वित्त – संकल्पना वैश्विक परिप्रेक्ष्य :

वैश्विक स्तर पर, हरित वित्त ने हाल के वर्षों में महत्वपूर्ण गति प्राप्त की है। जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (यूएनएफसीसीसी) और पेरिस समझौते ने निम्न-कार्बन, टिकाऊ अर्थव्यवस्था में संक्रमण को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पेरिस समझौते ने, विशेष रूप से, ग्लोबल वार्मिंग को पूर्व-औद्योगिक स्तरों से 2 डिग्री सेल्सियस से नीचे तक सीमित करने और तापमान वृद्धि को 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करने के प्रयासों का स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित किया है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निम्न-कार्बन, स्थायी प्रौद्योगिकियों और बुनियादी ढाँचे की ओर निवेश में महत्वपूर्ण बदलाव की आवश्यकता है। ग्लोबल सस्टेनेबल इन्वेस्टमेंट एलायंस के अनुसार, स्थायी निवेश के लिए वैश्विक बाजार 2020 में 31 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच गया, जो 2016 से 68% अधिक है।

भारत में हरित वित्त : वैश्विक विकास मंगेतर संस्थाएं और फंड सौर ऊर्जा और पनबिजली

"अपनी सरलता के कारण हिंदी प्रवासी भाइयों की स्वत: राष्ट्रभाषा हो गई।" - भवानीदयाल संन्यासी

जैसी परियोजनाओं को सस्ती दरों पर इक्विटी और ऋण के रूप में दीर्घकालिक समर्थन देने के लिए तैयार हैं जो कार्बन फुटप्रिंट को कम करने में मदद करते हैं। भारतीय रिज़र्व बैंक ने सरकारी संस्थाओं द्वारा ऐसी परियोजनाओं को वित्तपोषित करने के लिए अकेले m2023 में सॉवरेन ग्रीन बॉन्ड बेचकर 8,000 करोड़ रुपये जुटाए हैं। हाल के सौदों में से एक में, विश्व बैंक के सदस्य अंतर्राष्ट्रीय वित्त निगम (IFC) ने पिछले सप्ताह टाटा क्लीनटेक कैपिटल द्वारा जारी स्थिरता से जुड़े बांड में लगभग $50 मिलियन के निवेश की घोषणा की, जो नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं को वित्तपोषित करता है।

कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन और तेल आयात को कम करने के अपने आक्रामक लक्ष्यों को पूरा करने के लिए भारतीय हरित ऊर्जा में भारी निवेश कर रहा है। यह देश में हरित फाइनेंसरों को आकर्षित करने वाले कारणों में से एक है। भारत ने 2005 के स्तर से 2030 तक देश की कार्बन तीव्रता को 45% से अधिक कम करने का लक्ष्य रखते हुए अपने राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदानों को अद्यतन किया है। IFC के अनुमान बताते हैं कि भारत को अपने नवीकरणीय लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए 2030 तक नवीकरणीय वित्त में लगभग 403 बिलियन डॉलर की आवश्यकता होगी।

भारत में, हरित वित्त ने भी हाल के वर्षों में गति प्राप्त की है। भारत 2030 तक गैर-जीवाश्म ईंधन स्रोतों से 40% बिजली उत्पादन प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध है, और 2022 तक 175 GW अक्षय ऊर्जा क्षमता स्थापित करने का लक्ष्य रखा है। सरकार ने हरित वित्त को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न नीतिगत उपाय पेश किए हैं, जैसे कि नवीकरणीय ऊर्जा निवेश, हरित बंधन और हरित जलवायु कोष की स्थापना के लिए कर प्रोत्साहन। भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने भी बैंकों और वित्तीय संस्थानों के लिए अपने ऋण देने के निर्णयों में ESG कारकों को एकीकृत करने के लिए दिशानिर्देश पेश किए हैं। भारत का ग्रीन बॉन्ड बाजार हाल के वर्षों में उल्लेखनीय रूप से बढ़ा है, 2020 में इश्यू $10.4 बिलियन तक पहुंच गया, जो 2019 से 43% अधिक है। हालांकि, भारत में ग्रीन फाइनेंस को बढ़ाने में अभी भी महत्वपूर्ण चुनौतियां हैं, जैसे जागरूकता और क्षमता की कमी, अपर्याप्त नीति और नियामक ढांचे, और छोटे और मध्यम आकार के उद्यमों के लिए वित्त तक सीमित पहुंच।

हरित वित्त - आगे का रास्ता : हरित वित्त का भविष्य आशाजनक है, लेकिन इसके लिए आम जनता सहित सभी हितधारकों के सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है। शुद्ध-शून्य भविष्य प्राप्त करने के लिए स्थायी प्रौद्योगिकियों और बुनियादी ढांचे में महत्वपूर्ण निवेश के साथ-साथ उपभोग पैटर्न और जीवन शैली में बदलाव की आवश्यकता होती है। आम जनता अपने उपभोग पैटर्न में जागरूक विकल्प बनाकर इस प्रयास में योगदान दे सकती है, जैसे कि ऊर्जा-कुशल उपकरणों का उपयोग करना, कचरे को कम करना और सार्वजनिक परिवहन या इलेक्ट्रिक वाहनों का उपयोग करना। वित्तीय संस्थान और बाजार भी स्थायी निवेश को बढ़ावा देने और एक स्थायी अर्थव्यवस्था में संक्रमण को सुगम बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। COVID-19 महामारी ने वैश्विक अर्थव्यवस्था में लचीलापन और स्थिरता के निर्माण के महत्व पर प्रकाश डाला है, और हरित वित्त इस लक्ष्य को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

अंत में, सतत विकास को बढ़ावा देने और जलवायु परिवर्तन को कम करने में हरित वित्त एक महत्वपूर्ण उपकरण है। इसने विश्व स्तर पर महत्वपूर्ण गति प्राप्त की है, और भारत ने भी हरित वित्त को बढ़ावा देने के प्रयास किए हैं। हालाँकि, हरित वित्त को बढ़ाने में अभी भी महत्वपूर्ण चुनौतियाँ हैं, और इसे शुद्ध-शून्य भविष्य प्राप्त करने के लिए सभी हितधारकों के सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है। आम जनता अपने उपभोग पैटर्न में सचेत विकल्प बनाकर इस प्रयास में योगदान दे सकती है, और वित्तीय संस्थान और बाजार एक स्थायी अर्थव्यवस्था में परिवर्तन को सुविधाजनक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

> "भारतीय एकता के लक्ष्य का साधन हिंदी भाषा का प्रचार है।"
> - टी. माधवराव

वित्तीय जोखिम प्रबंधन

भावना जैन
प्रशिक्षु अधिकारी (वित्त)

परियोजना प्रबंधन में, जोखिम प्रबंधन एक ऐसी परियोजना के जोखिमों की पहचान करने, उनका मूल्यांकन करने और उन्हें रोकने या कम करने का अभ्यास है जो वांछित परिणामों को प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं। जोखिम प्रबंधन योजना प्रक्रिया का हिस्सा होना चाहिए ताकि जोखिम का पता लगाया जा सके जो परियोजना में हो सकता है और यदि यह वास्तव में होता है तो उस जोखिम को कैसे नियंत्रित किया जाए।

एक जोखिम कुछ भी है जो संभावित रूप से परियोजना की समयरेखा, प्रदर्शन या बजट को प्रभावित कर सकता है। जोखिम संभावनाएं हैं, और एक परियोजना प्रबंधन के संदर्भ में, यदि वे वास्तविकता बन जाते हैं, तो वे "मुद्दों" के रूप में वर्गीकृत हो जाते हैं जिन्हें संबोधित किया जाना चाहिए। इसलिए, जोखिम प्रबंधन, जोखिमों की पहचान करने, उन्हें वर्गीकृत करने, प्राथमिकता देने और उनके मुद्दे बनने से पहले योजना बनाने की प्रक्रिया है।

इसे "जोखिम = विफलता संभावना x विफलता से संबंधित क्षति" के रूप में भी दोहराया जा सकता है।

जोखिम प्रबंधन ढांचा:

- पहचान करना
- विश्लेषण
- प्राथमिकता दें
- स्वामित्व
- जवाब देना
- निगरानी करना

जोखिम की पहचान:

परियोजना जोखिमों की पहचान करने के लोकप्रिय 7 तरीके

- साक्षात्कार
- मंथन
- चेकलिस्ट
- धारणा विश्लेषण

- कारण और प्रभाव आरेख
- नाममात्र समूह तकनीक (एनजीटी)
- सादृश्य रेखाचित्र

फुर्तीली परियोजनाओं के लिए, जोखिमों की पहचान करने के लिए यहां कुछ अतिरिक्त समय दिए गए हैं:

- स्प्रिंट योजना
- रिलीज योजना
- दैनिक स्टैंडअप बैठकें
- प्रत्येक स्प्रिंट से पहले

जोखिम का विश्लेषण :

जोखिम का विश्लेषण करना कठिन है। कोई भी पर्याप्त जानकारी कभी भी एकत्रित नहीं कर सकता है।

वे नियम जो हम लागू करते हैं वे हैं कि कैसे जोखिम गतिविधि संसाधनों, अवधि और लागत अनुमानों को प्रभावित करता है। विचार करने के लिए परियोजना का एक अन्य पहलू यह है कि जोखिम कैसे अनुसूची और बजट को प्रभावित करने वाला है। फिर परियोजना की गुणवत्ता और खरीद है। परियोजना पर जोखिम के पूर्ण प्रभाव को समझने के लिए इन बिंदुओं पर विचार किया जाना चाहिए।

जोखिम को प्राथमिकता :

जोखिमों की एक बड़ी सूची होना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। लेकिन आप केवल जोखिमों को उच्च, मध्यम या निम्न के रूप में वर्गीकृत करके इसे प्रबंधित कर सकते हैं। सभी जोखिम समान रूप से नहीं बनाए जाते हैं। आपको यह जानने के लिए जोखिम का मूल्यांकन करने की आवश्यकता है कि आप इसे कब और यदि होने पर हल करने के लिए कौन से संसाधनों को इकट्ठा करने जा रहे हैं।

जोखिम के लिए एक स्वामी असाइन करें Assign an Owner to the Risk:

यदि हम जोखिम की निगरानी के लिए किसी को नियुक्त नहीं करते हैं तो जोखिम की पहचान करने और उसका मूल्यांकन करने की सारी मेहनत व्यर्थ है। वास्तव में, यह कुछ ऐसा है जो हमें जोखिमों को सूचीबद्ध करते समय करना चाहिए। वह व्यक्ति कौन है जो उस जोखिम के लिए जिम्मेदार है।

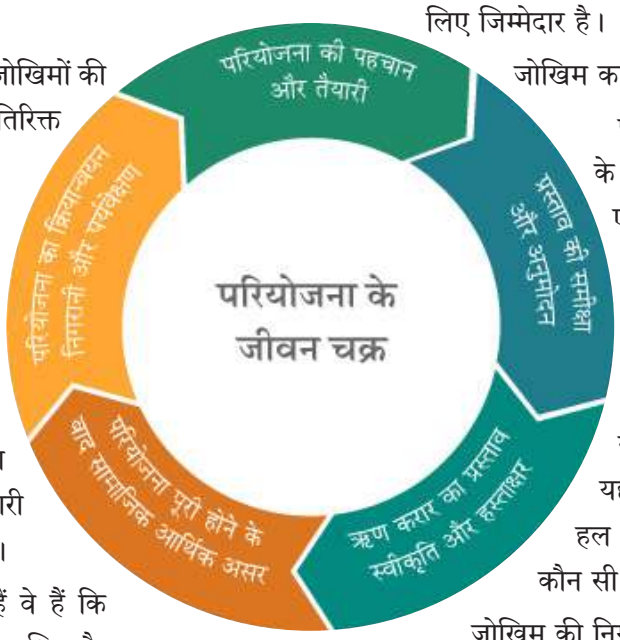

जोखिम का जवाब दें :

पहचाने गए प्रत्येक प्रमुख जोखिम के लिए, इसे कम करने के लिए एक योजना बनाएं। एक रणनीति, कुछ निवारक या आकस्मिक योजना विकसित करें। फिर इसे प्राथमिकता देकर जोखिम पर कार्य करें। हम जोखिम मालिक के साथ संचार कर सकते हैं और साथ में यह तय कर सकते हैं कि जोखिम को हल करने के लिए लागू करने के लिए कौन सी योजना बनाई गई है।

जोखिम की निगरानी करें :

जोखिमों की निगरानी करने की आवश्यकता है ताकि जब और जब जोखिम की प्रकृति, संभावित प्रभाव, या संभावना स्वीकार्य स्तर से बाहर हो जाए तो प्रबंधन तुरंत कार्य कर सके। जो कोई भी जोखिम का स्वामी होगा वह संकल्प की दिशा में इसकी प्रगति को ट्रैक करने के लिए जिम्मेदार होगा। लेकिन, एक परियोजना प्रबंधक के रूप में हमें नए जोखिमों की पहचान और निगरानी करने के लिए परियोजना की समग्र प्रगति की सटीक तस्वीर रखने के लिए अद्यतन रहने की आवश्यकता होगी।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता

दीपंकर दत्ता
सहायक महाप्रबंधक (सचिवीय)

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एआई) मशीनों द्वारा प्रदर्शित की जाने वाली बुद्धिमत्ता है, जो मनुष्यों और अन्य जानवरों की बुद्धिमत्ता के विपरीत है। उदाहरण कार्यों में यह किया जाता है जिसमें वाक् पहचान, कंप्यूटर दृष्टि (प्राकृतिक) भाषाओं के बीच अनुवाद, साथ ही निविष्टियां (इनपुट) के अन्य मानचित्रण शामिल हैं।

जैसे-जैसे मशीनें तेजी से सक्षम होती जाती हैं, "बुद्धि की आवश्यकता वाले कार्यों को अक्सर एआई की परिभाषा से हटा दिया जाता है, एक घटना जिसे एआई प्रभाव के रूप में जाना जाता है। उदाहरण के लिए ओरिकत चरित्र मान्यता (ओप्टिकल कैरेक्टर रिकग्निशन) को अक्सर एआई मानी जाने वाली चीजों से बाहर रखा जाता है, जो एक नियमित तकनीक बन गई है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की स्थापना 1956 में एक शैक्षणिक विषय के रूप में की गई थी, और इसके बाद के वर्षों में इसने आशावाद की कई लहरों का अनुभव किया। एआई अनुसंधान ने कई अलग-अलग दृष्टिकोणों की कोशिश की और खारिज कर दिया, जिसमें मस्तिष्क का अनुकरण करना, मानव समस्या को हल करने की मॉडलिंग करना, औपचारिक तर्क, ज्ञान के बड़े डेटाबेस और जानवरों के व्यवहार की नकल करना शामिल है। 21 वीं सदी के पहले दशकों में अत्यधिक गणितीय और सांख्यिकीय मशीन सीखने का क्षेत्र पर प्रभुत्व रहा है, और यह तकनीक अत्यधिक सफल साबित हुई है, जिससे पूरे उद्योग और शिक्षा जगत में कई चुनौतीपूर्ण समस्याओं को हल करने में मदद मिली है।

"समाज और राष्ट्र की भावनाओं को परिमार्जित करने वाला साहित्य ही सच्चा साहित्य है।" - जनार्दनप्रसाद झा द्विज

एआई अनुसंधान के क्षेत्र का जन्म 1956 में डार्टमाउथ कॉलेज में एक कार्यशाला में हुआ था। उपस्थित लोग एआई अनुसंधान के संस्थापक और नेता बन गए। उन्होंने और उनके छात्रों ने ऐसे कार्यक्रम तैयार किए जिन्हें प्रेस ने आश्चर्यजनक बताया: कंप्यूटर चेकर्स रणनीति सीख रहे थे बीजगणित में शब्द समस्याओं को हल कर रहे थे तार्किक प्रमेयों को सिद्ध कर रहे थे और अंग्रेजी बोल रहे थे।

1960 के दशक के मध्य तक अमेरिका में अनुसंधान को रक्षा विभाग द्वारा भारी वित्त पोषित किया गया था और दुनिया भर में प्रयोगशालाओं की स्थापना की गई थी।

1960 और 1970 के दशक में शोधकर्ता आश्वस्त थे कि प्रतीकात्मक दृष्टिकोण अंततः कृत्रिम सामान्य बुद्धि के साथ एक मशीन बनाने में सफल होंगे और इसे अपने क्षेत्र का लक्ष्य माना। [32] हर्बर्ट साइमन ने भविष्यवाणी की, 'मशीनें बीस वर्षों के भीतर, कोई भी ऐसा काम करने में सक्षम होंगी जो एक आदमी कर सकता है।" मार्विन मिस्की ने सहमति व्यक्त करते हुए लिखा, "एक पीढ़ी के भीतर .... कृत्रिम बुद्धिमत्ता बनाने की समस्या काफी हद तक हल हो जाएगी।"

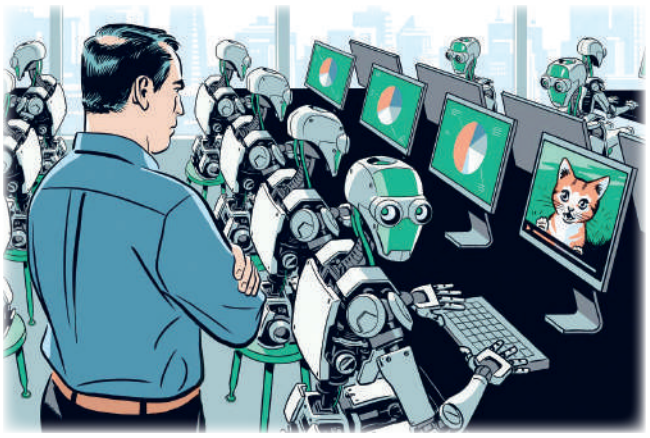

वे शेष कुछ कार्यों की कठिनाई को पहचानने में असफल रहे थे। प्रगति धीमी हो गई और 1974 में सर जेम्स लाइटहिल की आलोचना और अधिक उत्पादक परियोजनाओं को वित्तपोषित करने के लिए अमेरिकी कांग्रेस के चल रहे दबाव के जवाब में, अमेरिकी और ब्रिटिश दोनों सरकारों ने एआई में खोजपूर्ण अनुसंधान बंद कर दिया। अगले कुछ वर्षों को बाद में एआई विंटर कहा जाएगा, एक ऐसी अवधि जब एआई परियोजनाओं के लिए धन प्राप्त करना कठिन था।

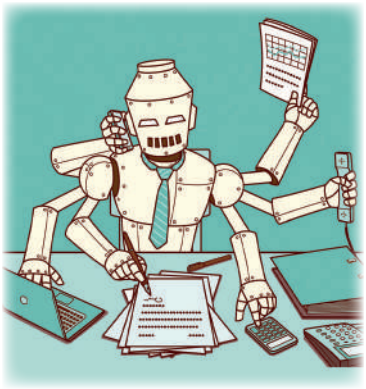

1980 के दशक की शुरुआत में एआई अनुसंधान को विशेषज्ञ प्रणालियों की व्यावसायिक सफलता से पुनर्जीवित किया गया था, एआई कार्यक्रम का एक रूप जिसने मानव विशेषज्ञों के ज्ञान और विश्लेषणात्मक कौशल का अनुकरण किया। 1985 तक, A1 का बाजार एक बिलियन डॉलर से अधिक हो गया था उसी समय जापान की पांचवीं पीढ़ी के कंप्यूटर प्रोजेक्ट ने अमेरिका और ब्रिटिश सरकारों को शैक्षणिक अनुसंधान के लिए धन बहाल करने के लिए प्रेरित किया। हालांकि, 1987 में लिस्प मशीन बाजार के पतन के साथ, एआई एक बार फिर बदनामी में पड़ गया, और एक दूसरी, लंबे समय तक चलने वाली सर्दी शुरू हो गई।

कई शोधकर्ताओं को संदेह होने लगा कि प्रतीकात्मक दृष्टिकोण मानव अनुभूति की सभी प्रक्रियाओं, विशेष रूप से धारणा, रोबोटिक्स, सीखने और पैटर्न की पहचान की नकल करने में सक्षम होगा। कई शोधकर्ताओं ने विशिष्ट एआई समस्याओं के लिए "उप-प्रतीकात्मक" दृष्टिकोणों को देखना शुरू किया रोडनी ब्रूक्स जैसे रोबोटिक्स शोधकर्ताओं ने प्रतीकात्मक एआई को खारिज कर दिया और बुनियादी इंजीनियरिंग समस्याओं पर ध्यान केंद्रित किया जो रोबोट को स्थानांतरित करने, जीवित रहने और अपने पर्यावरण को सीखने की अनुमति देगा।

> "शिक्षा के प्रसार के लिए नागरी लिपि का सर्वत्र प्रचार आवश्यक है।"
> – शिवप्रसाद सितारेहिंद

बंगाल के पर्यटन स्थलों की एक झलक

देबेश चक्रबर्ती
क्षेत्रीय प्रमुख (प्रभारी)

पश्चिम बंगाल भारत के पूर्वी भाग में स्थित एक राज्य है, जो अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, हरे-भरे जंगलों, सुरम्स परिदृश्य और ऐतिहासिक महत्व के लिए जाना जाता है। यह राज्य हिमालय और बंगाल की खाड़ी के बीच स्थित है, जो विविध प्रकार के पर्यटन स्थलों को दर्शाता है जो इसे यात्रियों के अन्वेषण के लिए एक आदर्श स्थान बनाता है। इस निबंध में हम पश्चिम बंगाल के कुछ शीर्ष पर्यटन स्थलों पर एक नजर डालेंगे।

कोलकाता : राजधानी शहर

पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता एक ऐसा शहर है जो अपने समृद्ध इतिहास, संस्कृति और भोजन के लिए प्रसिद्ध है। यह शहर विक्टोरिया मेमोरियल, हावड़ा ब्रिज, दक्षिणेश्वर काली मंदिर और सेंट पॉल कैथेड्रल जैसे कुछ प्रतिष्ठित स्थलों का घर है। विक्टोरिया मेमोरियल भारत में ब्रिटिश राज का प्रतीक है और इसमें एक संग्रहालय है जो कोलकाता के इतिहास को प्रदर्शित करता है। हावड़ा ब्रिज एक प्रतिष्ठित संरचना है जो शहर को उसके जुड़वा शहर हावड़ा से जोड़ती है। सेंट पॉल कैथेड्रल एक वास्तुशिल्प चमत्कार है जो गॉथिक-शैली की वास्तुकला के लिए जाना जाता है।

हिमालय पर्वत : एक प्रकृति का स्वर्ग

दार्जिलिंग : हिमालय की तलहटी में स्थित दार्जिलिंग एक लोकप्रिय हिल स्टेशन है जो अपने चाय बागानों, हिमालय के मनोरम दृश्यों और औपनिवेशिक युग की वास्तुकला के लिए जाना जाता है। यह शहर कई पर्यटक आकर्षणों का घर है, जैसे कि टाइगर हिल, जो कंचनजंगा पर्वत श्रृंखला पर सूर्योदय के आश्चर्यजनक दृश्य प्रस्तुत

"हमारी हिंदी भाषा का साहित्य किसी भी दूसरी भारतीय भाषा से किसी अंश से कम नहीं है।" - (रायबहादुर) रामरणविजय सिंह

करता है। दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे जिसे 'द्वाय ट्रेनञ के नाम से जाना जाता है, हिमालय की धरोहर स्थल है और शहर का एक प्रतिष्ठित प्रतीक है। बतासिया लूप एक अन्य लोकप्रिय पर्यटक आकर्षण है जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता है।

कालिम्पोंग : कालिम्पोंग का हिल स्टेशन हिमालय की तलहटी में स्थित एक अन्य लोकप्रिय पर्यटन स्थल है। यह शहर अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता है और यह ट्रेकिंग, रॉक क्लाइम्बिंग और रिवर राफ्टिंग जैसी साहसिक गतिविधियों के लिए कई अवसर प्रदान करता है। यह शहर कई बौद्ध मठों का भी घर है जो अपनी पारंपरिक तिब्बती वास्तुकला के लिए जाना जाता है।

वन और प्रकृति

डुआर्स : पूर्व में तीस्ता नदी से शुरू होकर पश्चिम बंगाल के संकोशी नदी तक, भूटान के आसपास उत्तर-पूर्वी भारत के बाढ़ के मैदानों को दिया गया एक स्थानीय नाम है। 'डुआर्सञ नाम 'द्वारञ से उभरी है

क्योंकि डुआर्स भूटान का प्रवेश द्वार है।

सुंदरवन : सुंदरवन पश्चिम बंगाल के दक्षिणी भाग में स्थित मैंग्रोव वन है और यह यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल है। यह रॉयल बंगाल टाइगर, खारे पानी के

मगरमच्छ और कई अन्य लुप्तप्राय प्रजातियों का घर है। आगंतुक मैंग्रोव वन के माध्यम से नाव की सवारी कर सकते है जो क्षेत्र की जैव विविधता का पता लगाने के लिए एक अनूठा अनुभव प्रदान करता है।

पुरुलिया : पश्चिम बंगाल राज्य का सबसे पश्चिमी जिला, पुरूलिया मंगमुग्ध कर देने वाली प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर एक खूबसूरत गंतव्य है।

विरासत, कला और संस्कृति के स्थान

शांतिनिकेतन : शांतिनिकेतन बीरभूम जिले में स्थित एक छोटा सा शहर है और यह नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर का जन्मस्थान है। यह शहर अपने

विश्वविद्यालय, विश्वभारती के लिए जाना जाता है, जिसकी स्थापना स्वयं टैगोर ने की थी। विश्वविद्यालय परिसर कई इमारतों का घर है जो बंगाली यूरोपीय स्थापत्य शैली का एक अनूठा मिश्रण प्रदर्शित करते है। यह शहर पौष मेला और बसंत उत्सव जैसे अपने त्योहारों के लिए भी जाना जाता है जो देश भर के पर्यटकों को आकर्षित करते है।

इतिहास

मुर्शिदाबाद : मुर्शिदाबाद गंगा नदी के तट पर स्थित एक ऐतिहासिक शहर है और

यह मुगल काल के दौरान बंगाल सूबा की राजधानी थी। यह शहर कई ऐतिहासिक स्थलों का घर है, जैसे हजारदुआरी पैलेस, निजामत इमामबाड़ा और कटरा मस्जिद। हजारदुआरी पैलेस एक भव्य महल है जिसमें एक संग्रहालय है जो शहर के इतिहास को प्रदर्शित करता है।

बांकुड़ा और विष्णुपर : बहुत ऐतिहासिक महत्व के साथ, बांकुड़ा अपनी पहाड़ियों और मंदिरों के लिए प्रसिद्ध शहर है और ट्रेकर्स और हाइकर्स जैसे साहसिक खेल के प्रति उत्साही लोगों के लिए एक अच्छा

स्थान है।

कूचबिहार : कूचबिहार, एक बार कोच वंश का प्रांत, उत्तर पश्चिम बंगाल में एक छोटा सा नियोजित शहर है। इतिहास और

पुरातत्व की ओर झुकाव रखने वाले लोगों के साथ-साथ पर्यावरण-पर्यटकों के लिए कूचबिहार साप्ताहांत में घूमने के लिए एक अच्छा विकल्प है।

समुद्र तट

दीघा : बंगाल की खाड़ी के तट पर स्थित

समुद्र तट शहर, दीघा एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है जो खासकर पश्चिम बंगाल के लोगों के बीच अपने अनछुए समुद्र तटों और सुंदर दृश्यों के लिए जाना जाता है।

धार्मिक स्थल

तारापीठ : तारापीठ पश्चिम बंगाल राज्य में एक प्रसिद्ध हिंदू तीर्थस्थल है और एक

शक्ति पीठ माना जाता है जहां सती की तीसरी आंख गिरी थी। मंदिर में सती के दूसरे रूप तारा की पूजा की जाती है।

गंगासागर : सागरद्वीप एक छोटा द्वीप है जो द्वीपों के सुंदरवन समूह का एक हिस्सा है। सागरद्वीप पवित्र नदी गंगा और बंगाल

की खाड़ी के संगम पर है जो यह देश के सबसे लोकप्रिय धार्मिक स्थलों में से एक है।

दक्षिणेश्वर : दक्षिणेश्वर काली मंदिर एक लोकप्रिय तीर्थ स्थल है जो देश भर से भक्तों को आकर्षित करता है।

बेलूर मठ : कोलकाता में बेलूर मठ रामकृष्ण मठ और मिशन का मुख्यालय है। हुगली नदी के पश्चिमी तट पर चालीस एकड़ से अधिक भूमि में फैला हुआ है। उनकी पृथक धार्मिक मान्यताओं के बावजूद यहां दुनिया भर के लोगों द्वारा दर्शन किया जाता है।

निष्कर्ष : अंत में, पश्चिम बंगाल एक ऐसा राज्य है जो कोलकाता के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक स्थलों से लेकर हिमालय की तलहटी की प्राकृतिक सुंदरता तक विविध प्रकार के पर्यटन स्थलों की पेशकश करता है। राज्य के पास हर तरह के यात्रियों के लिए कुछ न कुछ है, चाहे वह साहसिक कार्य हो, इतिहास हो या संस्कृति। ऊपर सूचीबद्ध कुछ स्थान है।

"हिंदी भाषा अपनी अनेक धाराओं के साथ प्रशस्त क्षेत्र में प्रखर गति से प्रकाशित हो रही है।" - छविनाथ पांडेय

अशीमा मल्लिक
ए.एफ. (एस जी)

मेरा भारत महान हैं और अपने भारतीय होने पर गर्व है। जहां अलग-अलग धर्म, जाति, भाषा, रंग, रूप के लोग बहुत प्रेम के साथ रहते है। जहां दूर्गा पूजा, दिवाली, होली, क्रिसमस, ईद हर त्यौहार को अपनेपन से मनाया जाता हैं। भारत में मुगल शासकों और अंग्रेजों का शासन हमारी संस्कृति का हिस्सा रहा है। भारत में हमेशा अतिथि देवो भवः की संस्कृति रही है। मुगलों और अंग्रेजों ने हमारे ऊपर कई साल शासन किया लेकिन हम भारतीयों न उनका भी दिल खोल कर स्वागत किया। उन्होंने कई बार भारत में फूट डालने की नीति अपनाई लेकिन भारत ने विविधता में एकता के रहते उन्हें यहाँ से भाग जाने के लिए मजबूर कर दिया। इतना कुछ होने के बावजूद भी हमारी संस्कृति, संस्कार अपनापन में कोई बदलाव नहीं आया।

भारत की संस्कृति सच में अद्भुत है। दूर-दूर से लोग भारत की संस्कृति और सभ्यता का अध्ययन भी करते हैं। अपने से बड़ो का आदर सत्कार करना, छोटों के साथ विनम्रता से व्यवहार करना हमें बचपन से ही परिवार का महत्व बताया जाता है और कैसे परिवार को प्रेम के धागे में पीरो कर रखना चाहिए साथ ही भाईचारे से सबके साथ कैसे रहना चाहिए। भारत अपनी विभिन्न नृत्य कलाओं के लिए भी प्रसिद्ध है।

> "देवनागरी ध्वनिशास्त्र की दृष्टि से अत्यंत वैज्ञानिक लिपि है।"
> - रविशंकर शुक्ल

पूंजीगत बजट निर्णय

सागनिक भौमिक
प्रशिक्षु अधिकारी (वित्त)

वित्तीय प्रबंधन के संदर्भ में, कैपिटल बजटिंग को उस प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसके द्वारा एक व्यवसाय यह निर्धारित करता है कि कौन सी अचल संपत्ति की खरीद या परियोजना निवेश स्वीकार्य हैं और कौन से नहीं। इस दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए, प्रत्येक प्रस्तावित निवेश को मात्रात्मक विश्लेषण दिया जाता है, जिससे व्यापार मालिकों द्वारा तर्कसंगत निर्णय लिया जा सकता है। पूंजीगत संपत्ति प्रबंधन के लिए बहुत अधिक धन की आवश्यकता होती है, इसलिए, इस तरह के निवेश करने से पहले, उन्हें यह सुनिश्चित करने के लिए पूंजीगत बजट बनाना चाहिए कि निवेश कंपनी के लिए लाभ अर्जित करेगा। इसलिए, कंपनियों को ऐसी पहल करनी चाहिए जिससे उनकी लाभप्रदता में वृद्धि हो और उनके शेयरधारकों या निवेशकों की संपत्ति में भी वृद्धि हो।

पूंजी बजटिंग की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं:

1. प्रारंभिक निवेश और अपेक्षित प्रतिफल के बीच एक लंबी अवधि है।
2. संगठन आमतौर पर बड़े मुनाफे का अनुमान लगाते हैं।
3. प्रक्रिया में उच्च जोखिम शामिल हैं।
4. यह लंबे समय में एक निश्चित निवेश है।
5. किसी परियोजना में किया गया निवेश किसी संगठन की भविष्य की वित्तीय स्थिति को निर्धारित करता है।
6. सभी परियोजनाओं के लिए महत्वपूर्ण मात्रा में धन की आवश्यकता होती है।
7. परियोजना में किए गए निवेश की राशि कंपनी की लाभप्रदता निर्धारित करती है।

कैपिटल बजटिंग कैसे काम करती है?

किसी कंपनी के लिए पूंजीगत बजट संबंधी निर्णय लेते समय यह प्रमुख महत्व रखता है कि यह निर्धारित करता है कि

"हमारी नागरी दुनिया की सबसे अधिक वैज्ञानिक लिपि है।"
- राहुल सांकृत्यायन

परियोजना लाभदायक होगी या नहीं। परियोजनाओं के चयन के सबसे आम तरीके हैं:

भुगतान वापसी अवधि - यह प्रारंभिक निवेश को कवर करने के लिए पर्याप्त आय उत्पन्न करने के लिए प्रस्तावित परियोजना द्वारा लिए गए समय को संदर्भित करता है। सबसे तेज पेबैक वाली परियोजना को कंपनी द्वारा चुना जाता है।

लौटाने की अवधि = आरंभिक नकद निवेश/वार्षिक नकदी प्रवाह

रिटर्न की लेखा दर (एआरआर) - एआरआर एक पूंजी बजटिंग मीट्रिक है जो किसी निवेश की लाभप्रदता की शीघ्रता से गणना करने के लिए उपयोगी है। व्यवसाय एआरआर का उपयोग प्रत्येक परियोजना की वापसी की अपेक्षित दर निर्धारित करने के लिए या किसी निवेश या अधिग्रहण पर निर्णय लेने में मदद करने के लिए कई परियोजनाओं की तुलना करने के लिए करते हैं।

ARR = औसत वार्षिक लाभ/प्रारंभिक निवेश

नेट प्रेजेंट वैल्यू (एनपीवी) - यह विधि पैसे के समय मूल्य पर विचार करती है और इसे कंपनी के उद्देश्य के लिए जिम्मेदार ठहराती है, जो कि इसके मालिकों के लिए लाभ को अधिकतम करना है।

एनपीवी = आरटी/(1+i)टी

टी = नकदी प्रवाह का समय

मैं = छूट दर

आरटी = शुद्ध नकदी प्रवाह

रिटर्न की आंतरिक दर (आईआरआर) - यह उस पद्धति को संदर्भित करता है जहां एनपीवी शून्य है। ऐसी स्थिति में, नकदी प्रवाह दर नकदी बहिर्वाह दर के बराबर होती है। हालांकि यह पैसे के समय मूल्य पर विचार करता है, यह जटिल तरीकों में से एक है। यह इस नियम का पालन करता है कि यदि आईआरआर पूंजी की औसत लागत से अधिक है, तो कंपनी परियोजना को स्वीकार करती है, अन्यथा अस्वीकार कर देती है।

आईआरआर = डिस्काउंट दर जहां एनपीवी = 0, का मतलब है कि डिस्काउंटेड कैश इनफ्लो डिस्काउंटेड कैश आउटफ्लो के बराबर है। इसकी गणना परीक्षण और त्रुटि विधि का उपयोग करके की जाती है।

फायदे Advantages

1. जोखिमों और उसके प्रभावों को समझने में मदद करता है।
2. निवेश के अवसरों में निर्णय लेना।
3. कैपिटल बजटिंग की विभिन्न तकनीकें।
4. सभी संभावित कारकों पर विचार करते हुए एक सूचित निर्णय लेना।
5. शेयरधारकों के धन में वृद्धि और बाजार में लाभप्रद।
6. व्यय पर पर्याप्त नियंत्रण।

सीमाएँ

1. निर्णय दीर्घकालिक और प्रमुख रूप से अपरिवर्तनीय प्रकृति के होते हैं।
2. अनिश्चितता गलत प्रयोज्यता की ओर ले जाती है।
3. तकनीकों को ग्रहण किया जाता है और वास्तविक नहीं।
4. गलत निर्णय दीर्घकालिक स्थायित्व को प्रभावित करता है।
5. व्यक्तिपरक जोखिम और छूट कारक के कारण प्रकृति में आत्मनिरीक्षण।

निष्कर्ष

पूंजीगत संपत्तियों में निवेश इस बात से निर्धारित होता है कि वे भविष्य में नकदी प्रवाह को कैसे प्रभावित करेंगे, जो कि पूंजीगत बजट को करना चाहिए। पूंजी निवेश भविष्य में कम नकदी की खपत करता है जबकि बाद में व्यवसाय में प्रवेश करने वाली नकदी की मात्रा में वृद्धि करना बेहतर होता है। कैपिटल बजटिंग में सनक लागतों पर विचार नहीं किया जाता है। प्रक्रिया पिछले खर्चों के बजाय भविष्य के नकदी प्रवाह पर केंद्रित है।

भारत में खुशी और स्वतंत्रता

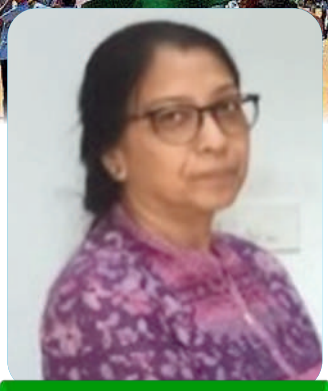

अर्चिता दत्ता
उप प्रबंधक (वित्त)

हालांकि एक मायावी अवधारणा, खुशी एक ऐसी चीज है जिसे शायद हम सभी किसी न किसी अर्थ में खोजते हैं। हममें से प्रत्येक की अलग-अलग समझ है कि हमारे लिए खुशी का क्या अर्थ है और हम इसे कैसे प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप मानते हैं कि खुशी व्यक्तिपरक है तो इस खुशी का पीछा करने की आजादी एक स्वाभाविक अगला कदम है। इसके आसपास की बातचीत कुछ ऐसी है जिसे मैं इस निबंध में एक्सप्लोर करना चाहता हूं।

खुशी व्यक्ति के लिए व्यक्तिपरक है यह एक स्वयं स्पष्ट तथ्य प्रतीत हो सकता है, लेकिन कुछ विशेषज्ञ जरूरी नहीं मानते हैं। इस विश्वास के साथ कि अन्य कारकों के साथ खुशी को मापना, आकलन करना और सहसंबद्ध करना संभव और सार्थक है, और खुशी की खोज एक व्यक्तिगत प्रयास के बजाय एक राष्ट्रीय नीति हो सकती है, जेफरी सैक्स और विकास विशेषज्ञों ने 2012 में राष्ट्रीय खुशी को मापना शुरू किया। द वर्ल्ड हैप्पीनेस रिपोर्ट 2022 में पाया गया है कि "आय और जीडीपी पर ध्यान कम हो रहा है, और 2013 से प्रकाशित पुस्तकों में, जीडीपी (या इसी तरह) शब्द 'खुशी' शब्द की तुलना में कम बार दिखाई दिए हैं।"

20 मार्च को संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा भलाई और खुशी पर एक उच्च स्तरीय बैठक और 2012 में पहली विश्व खुशहाली रिपोर्ट जारी करने के बाद अंतर्राष्ट्रीय प्रसन्नता दिवस के रूप में घोषित किया गया है। भारत में, अधिकांश, मैं विश्वास करते हैं, समाचार सुर्खियों द्वारा उस दिन की याद दिला दी जाती है जो इस बात को उजागर करता है कि भारत सबसे दुखी देशों में से एक है। उन्हें मेम्स द्वारा भी याद दिलाया जा सकता है जैसे कि मेरे इंस्टाग्राम फीड पर दिखाया

"उसी दिन मेरा जीवन सफल होगा जिस दिन मैं सारे भारतवासियों के साथ शुद्ध हिंदी में वार्तालाप करूँगा।" - शारदाचरण मित्र

गया है:

2022 की रिपोर्ट में भारत को 2012 से 2021 तक खुशी में सबसे बड़ी गिरावट वाले शीर्ष 10 देशों में सूचीबद्ध किया गया है। 2022 की रिपोर्ट में, अध्ययन किए गए 146 देशों में भारत 136वें स्थान पर है।

रिपोर्ट में खुशी को सबसे सरल तरीके से मापा जाता है जिसकी आप कल्पना कर सकते हैं - लोगों से यह पूछना कि वे कितने खुश हैं। सालाना, एक देश में 1000 लोगों का सर्वेक्षण किया जाता है, और उन्हें एक सीढ़ी की कल्पना करने के लिए कहा जाता है जिसमें 0 से नीचे और 10 से शीर्ष पर क्रमांकित चरण होते हैं। सीढ़ी का शीर्ष उत्तरदाता के लिए सर्वोत्तम संभव जीवन का प्रतिनिधित्व करता है और सीढ़ी का निचला भाग उत्तरदाता के लिए सबसे खराब संभव जीवन का प्रतिनिधित्व करता है। इसके बाद उत्तरदाताओं से पूछा जाता है कि वे इस समय सीढ़ी पर कहां खड़े महसूस करते हैं। यह संख्या तब देश के लिए औसत है। रिपोर्ट में 3 वर्षों के डेटा को शामिल किया गया है, इसलिए प्रत्येक देश के लिए नमूना आकार लगभग 3000 होगा। 2022 की रिपोर्ट में 2019, 2020 और 2021 के डेटा होंगे। 2022 की रिपोर्ट में भारत का स्कोर 3.777 था।

रिपोर्ट द्वारा जिन 6 कारकों पर विचार किया गया है, वे लोगों की खुशी पर प्रभाव डाल सकते हैं -

(i) प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद;

(ii) सामाजिक समर्थन;

(iii) जीवन प्रत्याशा के संदर्भ में स्वास्थ्य;

(iv) जीवन विकल्प बनाने की स्वतंत्रता;

(v) उदारता;

(vi) भ्रष्टाचार की धारणाएँ

रिपोर्ट, कुछ सरल सांख्यिकीय विश्लेषण के माध्यम से, यह पता लगाने की कोशिश करती है कि किस हद तक प्रत्येक कारक खुशी को निर्धारित करता है जिसे उन्होंने मापा है। भारत में खुशी, 2022 में, ज्यादातर 'जीडीपी प्रति व्यक्ति' द्वारा 31% पर, फिर 'जीवन विकल्प बनाने की स्वतंत्रता' द्वारा 17% पर और कम से कम 'भ्रष्टाचार की धारणा' द्वारा 3% पर समझाया गया था। ध्यान दें कि राष्ट्रीय खुशी का आंकड़ा कारकों का वास्तविक संयोजन नहीं है, लेकिन स्वतंत्र रूप से मापा जाता है, सूचकांकों के विपरीत जहां कुल सूचकांक मूल्य पर पहुंचने के लिए कारकों की मात्रा या तो जोड़ दी जाती है या गुणा की जाती है।

इसके परिणामों के संदर्भ में स्वतंत्रता महत्वपूर्ण है - व्यक्तिगत स्वतंत्रता में यह शामिल है कि लोग उन चीजों को करने के लिए स्वतंत्र हैं जो उन्हें मूल्य और खुशी मिलती हैं जब तक कि वे दूसरों के अधिकारों का सम्मान करते हैं, और आर्थिक स्वतंत्रता समृद्धि का सबसे बड़ा व्याख्याता है (खुशी का एक अन्य निर्धारक)). अगले खंडों में, मैं इस प्रकार पता लगाता हूं कि यह स्वतंत्रता क्या है जिसके बारे में रिपोर्ट बात करती है और यह वास्तव में हमें लोगों की स्वतंत्रता के बारे में कितना बताती है?

रिपोर्ट की कार्यप्रणाली के अनुसार, यहां 'जीवन विकल्प बनाने की स्वतंत्रता' को कैसे मापा जाता है:

जीवन विकल्प बनाने की स्वतंत्रता GWP प्रश्न के लिए द्विआधारी प्रतिक्रियाओं (0 = नहीं, 1 = हाँ) का राष्ट्रीय औसत है, "क्या आप अपने जीवन के साथ क्या करते हैं, यह चुनने की आपकी स्वतंत्रता से संतुष्ट या असंतुष्ट हैं?"

मूल रूप से, माप का मूल्य व्यक्ति की धारणा से निर्धारित होता है। 2015 और 2019 के बीच 'जीवन विकल्प बनाने की स्वतंत्रता' द्वारा बताई गई खुशी 0.398 से बढ़कर 0.498 हो गई है, और 2022 में 0.647 हो गई है।

स्वतंत्रता का एक और, बहुत भिन्न माप है, जो अधिक संस्थागत है - CATO संस्थान और फ्रेज़र संस्थान द्वारा प्रकाशित मानव स्वतंत्रता सूचकांक (HFI)। सूचकांक 82 अलग-अलग संकेतकों का उपयोग करता है

व्यक्तिगत और आर्थिक स्वतंत्रता। HFI का निर्माण स्वतंत्रता के विभिन्न उपायों के भारित औसत के रूप में किया गया है, जो इस बात पर आधारित है कि राज्य संस्थाएँ कितनी प्रतिबंधात्मक हैं और स्वतंत्रता के उल्लंघन पर डेटा।

एचएफ़आई के अनुसार 2015 और 2019 के बीच व्यक्तिगत स्वतंत्रता में कमी आई है (हैप्पीनेस रिपोर्ट में 'जीवन के चुनाव करने की आज़ादी' में वृद्धि से हटकर)। भारत के लिए 2015 और 2019 के बीच HFI के साथ 'लाइफ च्वॉइस बनाने की आजादी' द्वारा समझाई गई खुशी के बीच सहसंबंधों की एक त्वरित गणना (अवधि जब डेटा ओवरलैप होती है) हमें बताती है कि मापी गई

कथित स्वतंत्रता (वर्ल्ड हैप्पीनेस रिपोर्ट द्वारा) बढ़ रही है HFI द्वारा मापी गई स्वतंत्रता के विपरीत दिशा में। नीचे दी गई तालिका मानव स्वतंत्रता सूचकांक के विशेष घटकों पर भारत की स्वतंत्रता में परिवर्तन को दर्शाती है।

मानव स्वतंत्रता सूचकांक 2021 में 2019 के आंकड़ों पर नजर डालें तो भारत 165 देशों में 119वें स्थान पर है, केवल 18% देशों से बेहतर कर रहा है। वर्ल्ड हैप्पीनेस रिपोर्ट 2022 में, लोगों द्वारा माना गया 'जीवन विकल्प बनाने की स्वतंत्रता' के मामले में इसने 77% देशों से बेहतर प्रदर्शन किया।

हालांकि यह एक छोटा सा नमूना है जिस पर हम विचार कर रहे हैं, यह विचलन थोड़ा पेचीदा है।

गैलप पोल, जो वर्ल्ड हैप्पीनेस रिपोर्ट के आंकड़ों का स्रोत है, देश का एक प्रतिनिधि नमूना लेता है। इस प्रकार इस डेटा को विभिन्न जनसांख्यिकीय समूहों के आकार द्वारा भारित किया जाता है - अल्पसंख्यक समूहों की तुलना में बहुसंख्यक समूहों का भार अधिक होगा। आइए धार्मिक स्वतंत्रता पर विचार करें। भारत में विशेष रूप से अल्पसंख्यकों के लिए धार्मिक स्वतंत्रता में काफी कमी आई है। अल्पसंख्यक समूहों से संबंधित व्यक्तियों द्वारा देखी गई स्वतंत्रता कम हो सकती है, लेकिन यदि बहुसंख्यक समूहों से संबंधित व्यक्तियों की स्वतंत्रता में वृद्धि हो सकती है, तो विश्व खुशी के अनुसार शुद्ध परिणाम

रिपोर्ट में वृद्धि होगी। इस प्रकार का उपाय प्रकृति में बहुत उपयोगितावादी है, यह व्यक्तिगत घटकों के बजाय कुल पर केंद्रित है। खुशी और स्वतंत्रता बहुत गुणकारी हैं, लेकिन अगर उन्हें दूसरों के अधिकारों और स्वतंत्रता की कीमत पर आना है, तो कुछ और चीजें अधिक शातिर होंगी। द हैप्पीनेस रिपोर्ट कहती है कि संख्याओं को निर्णायक की तुलना में अधिक व्याख्यात्मक माना जाता है, लेकिन चित्रण थोड़ा पक्षपाती हो सकता है।

2014 के एक अध्ययन में भी वास्तविक स्वतंत्रता और कथित स्वतंत्रता के बीच केवल एक छोटा, हालांकि सकारात्मक सहसंबंध पाया गया, जबकि अभी भी अतिरिक्त रूप से इस बिंदु को मजबूत किया गया है कि स्वतंत्रता (वास्तविक या कथित दोनों) खुशी का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है।

राष्ट्रीय नीति के मामले के रूप में खुशी

खुशी को राष्ट्रीय नीति का विषय होना चाहिए या नहीं, इस पर, मैं भारतीय अर्थशास्त्री बीआर शेनॉय ने अपने 1957 के निबंध माई आइडिया ऑफ ए वेलफेयर स्टेट में लिखी बात का उल्लेख करना चाहता हूं:

"एक राज्य जहां धर्म का शासन प्रचलित है, एक कल्याणकारी राज्य है, यहाँ कल्याण का उद्देश्य सृजन है, सरकारी पक्ष में अनुमेय सीमा तक, व्यक्तियों द्वारा जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति की सुविधा प्रदान करने वाली स्थितियाँ।"

स्वतंत्रता - व्यक्तिगत, राजनीतिक और आर्थिक अर्थों में, कानून का शासन और सभी के अधिकारों की सुरक्षा खुशी के लिए सबसे महत्वपूर्ण है जिसे व्यक्ति प्राप्त कर सकता है। गांधी ने द स्टोरी ऑफ माय एक्सपेरिमेंट्स विद ट्रुथ में लिखा, "मैं जो हासिल करना चाहता हूं - जो मैं इन तीस वर्षों से हासिल करने का प्रयास कर रहा हूं और वह आत्म-साक्षात्कार है ... मोक्ष प्राप्त करने के लिए। मैं इस लक्ष्य की खोज में रहता हूं और आगे बढ़ता हूं और अपना अस्तित्व रखता हूं।

खुशी, और उसका पीछा करना, एक बहुत ही व्यक्तिगत चीज है। विकास विशेषज्ञों को अन्यथा विश्वास न करने दें। इसके अतिरिक्त, मेरा मानना है कि जहां स्वतंत्रता सुख की प्राप्ति का एक महत्वपूर्ण साधन है, वहीं स्वतंत्रता भी अपने आप में एक पुण्य साध्य है।

"हिंदी जाननेवाला व्यक्ति देश के किसी कोने में जाकर अपना काम चला लेता है।" - देवव्रत शास्त्री

कपड़ा डिजाइन

कपड़ा डिजाइन का इतिहास हजारों साल पीछे चला जाता है। वस्त्रों के शीघ्र नष्ट होने के कारण, वस्त्र डिजाइन के प्रारंभिक उदाहरण दुर्लभ हैं। हालांकि, पाए गए वस्त्रों के कुछ सबसे पुराने ज्ञात उदाहरण 5000 ईसा पूर्व में नवपाषाण संस्कृतियों से जाल और टोकरीसाजी और तारीख के रूप में खोजे गए थे। जब यूरोपीय देशों में व्यापार नेटवर्क का गठन हुआ, तो रेशम, ऊन, कपास और सन के रेशे के कपड़े मूल्यवान वस्तुएं बन गए। मिस्र, चीनी, अफ्रीकी और पेरूवियन समेत कई प्रारंभिक संस्कृतियों ने शुरुआती बुनाई तकनीकों का अभ्यास किया। कपड़ा डिजाइन के सबसे पुराने उदाहरणों में से एक 1947 में एक प्राचीन साइबेरियाई मकबरे से मिला था। कहा जाता है कि यह मकबरा एक राजकुमार का है और 464 ABD से पुराना है; 2500 साल से अधिक पुरानी मकबरे और इसकी सभी सामग्री।

स्निग्धा दत्ता
सुपुत्री श्री दीपंकर दत्ता
सहायक महाप्रबंधक (सचिवीय)

टेक्सटाइल डिजाइनिंग एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें फैशन डिजाइन, कालीन निर्माण और कपड़े से संबंधित कोई भी अन्य क्षेत्र शामिल है। [4] कपड़े, कालीन, पर्दे और तौलिये सभी कार्यात्मक उत्पाद हैं जो कपड़ा डिजाइन से उत्पन्न होते हैं। कपड़ा डिजाइन ने कला के क्षेत्र में अन्य कार्यों या प्रवृत्तियों को प्रभावित किया है। इसके लिए उत्पादन के तकनीकी पहलुओं और फाइबर, यार्न और डाई के गुणों को समझने की आवश्यकता होती है।

मुद्रित वस्त्र डिजाइन तैयार किए जाते हैं विभिन्न मुद्रण प्रक्रियाओं के द्वारा। प्रिंटेड टेक्सटाइल डिज़ाइन, बुने हुए टेक्सटाइल डिज़ाइन, और मिश्रित मीडिया टेक्सटाइल डिज़ाइन, टेक्सटाइल डिज़ाइन के तीन प्रमुख विषय हैं, जिनमें से प्रत्येक विभिन्न प्रकार के उपयोगों और बाज़ारों के लिए एक सतह अलंकृत कपड़ा बनाने के लिए अलग-अलग तरीकों का उपयोग करता है, अर्थात्: मुद्रण का विरोध, राहत मुद्रण, रोटोग्राव्योर, स्क्रीन प्रिंटिंग, ट्रांसफर प्रिंटिंग और डिजिटल प्रिंटिंग।

बुनाई के संदर्भ में डिज़ाइन विभिन्न प्रकार के धागों का उपयोग करके बनाए जाते हैं, बनावट, आकार और रंग में भिन्नता का उपयोग करके एक शैलीबद्ध पैटर्न वाले या

> "हिंदी और नागरी का प्रचार तथा विकास कोई भी रोक नहीं सकता।"
> - गोविन्दवल्लभ पंत

मोनोक्रोमैटिक कपड़े का निर्माण किया जाता है। डिजाइनर के लिए यार्न प्रकारों की एक बड़ी श्रृंखला उपलब्ध है, जिसमें कपास, टवील, लिनन और सिंथेटिक फाइबर शामिल हैं, लेकिन यह इतनी ही सीमित नहीं है।

बुनाई संरचना से परे, बुने हुए वस्त्र डिजाइन को नियंत्रित करने वाला रंग एक अन्य प्रमुख पहलू है। आमतौर पर, डिजाइनर दो या दो से अधिक विपरीत रंग चुनते हैं जो डिजाइनर के चुने हुए थ्रेडिंग अनुक्रम के आधार पर पैटर्न में बुने जाते हैं। रंग सूत के आकार पर भी निर्भर करता है: महीन सूत एक ऐसे कपड़े का उत्पादन करेगा जो विभिन्न कोणों से प्रकाश प्राप्त करने पर रंग बदल सकता है जबकि बड़े सूत आम तौर पर एक अधिक मोनोक्रोमैटिक सतह का उत्पादन करेंगे।

कपड़ा डिजाइन का अभ्यास और उद्योग पर्यावरण संबंधी चिंताओं को प्रस्तुत करता है। कच्चे माल से कपड़े के उत्पादन से लेकर रंगाई और परिष्करण तक, और अंत में उत्पादों का अंतिम निपटान, प्रक्रिया का प्रत्येक चरण पर्यावरणीय प्रभाव पैदा करता है जो तेजी से फैशन और अन्य आधुनिक औद्योगिक प्रथाओं के उद्भव के साथ बढ़ा है।

मुख्य रूप से, ये पर्यावरणीय प्रभाव कपड़ा निर्माण प्रक्रिया के प्रत्येक चरण में शामिल खतरनाक रसायनों के भारी उपयोग से उत्पन्न होते हैं जिन्हें ठीक से निपटाना चाहिए। अन्य विचारों में कपड़ा डिजाइन उत्पादों के निपटान और पुनर्चक्रण योग्य वस्त्रों के पुन: उपयोग और पुन: उपयोग से उत्पन्न कचरे की मात्रा शामिल है। पर्यावरण संरक्षण एजेंसी ने बताया कि सालाना 15 मिलियन टन से अधिक कपड़ा कचरा पैदा होता है। इसमें सभी नगरपालिका कचरे का लगभग 5% उत्पन्न होता है और उस कचरे का केवल 15% ही पुनर्प्राप्त और पुन: उपयोग किया जाता है।

वस्त्रों के संबंध में तरीके, पैटर्न, डिजाइन और महत्व संस्कृति से संस्कृति में भिन्न होते हैं। अफ्रीका के देशों के लोग वस्त्रों का उपयोग अपनी संस्कृति और जीवन के तरीके की अभिव्यक्ति के एक बड़े रूप के रूप में करते हैं। वे वस्त्रों का उपयोग किसी स्थान के इंटीरियर को जीवंत करने या किसी व्यक्ति के शरीर को निखारने और सजाने के लिए करते हैं। चाहे कपड़े के टुकड़े के लिए या गलीचा के लिए, अफ्रीकी संस्कृतियों के कपड़ा डिजाइनों में पट्टी-बुने हुए तंतुओं की प्रक्रिया शामिल होती है जो एक पैटर्न को दोहरा सकते हैं या पट्टी से पट्टी में भिन्न हो सकते हैं।

"संस्कृत मां, हिंदी गृहिणी और अंग्रेजी नौकरानी है।"
- डॉ. फादर कामिल बुल्के

लॉकडाउन - मानव जीवन के लिए एक नया युग

संजय कुमार घोष
चौकीदार (एस जी)

लॉकडाउन एक ऐसी क्रिया है जो किसी देश के लोगों की आवाजाही पर रोक लगाने से संबंधित है। भारत में, लॉकडाउन, बल्कि ऐतिहासिक लॉकडाउन पहली बार 25 मार्च से 14 अप्रैल, 2020 तक लागू किया गया था। इसे 3 मई, 2020 तक और फिर 30 जून, 2020 तक बढ़ाया गया था। यह वैश्विक महामारी कोरोना वायरस को कम करने के लिए सरकार की पहल थी। आपातकालीन सेवाओं को छोड़कर, सब कुछ बंद और प्रतिबंधित था।

पहला लॉकडाउन: यह 25 मार्च से 14 अप्रैल तक 2020 तक पहली बार लागू किया गया था। जब कुछ आवश्यक किराना दुकानों और स्वास्थ्य सुविधाओं को छोड़कर पूरा देश पूरी तरह से बंद था।

दूसरा लॉकडाउन: दूसरे लॉकडाउन की घोषणा 15 अप्रैल से 4 मई, 2020 तक उसी नियमों और अधिनियमों के साथ लागू की गई थी।

तीसरा लॉकडाउन: इसे 4 मई से 17 मई, 2020 तक लागू किया गया था लेकिन लॉकडाउन के इस चरण में दिहाड़ी मजदूरों की मदद के लिए कुछ विशेष ट्रेनें चलाई गईं थी। विदेश में फंसे कुछ लोगों को भी वापस लाया गया। इस ऑपरेशन को "ऑपरेशन समुद्रसेतु" नाम दिया गया था।

चौथा लॉकडाउन: इसे 31 मई तक लागू किया गया और आगे अलग-अलग राज्यों को उनके राज्य के जिलों की स्थिति के अनुसार विस्तारित किया गया, क्षेत्र में कोविद मामलों के अनुसार तीन क्षेत्रों में विभाजित किया गया। क्षेत्र में कुछ मामलों के लिए नारंगी जबकि बिना संक्रमण वाले क्षेत्रों के लिए हरा।

लॉकडाउन का प्रभाव:

नोवेल कोरोनावायरस रोग: यह लॉकडाउन का सबसे महत्वपूर्ण और सबसे वांछनीय प्रभाव है। नोवेल कोरोनावायरस अत्यधिक संक्रामक था, जो एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में तेजी से फैलता था। लॉकडाउन ने सोशल डिस्टेंसिंग को प्रभावी बना दिया।

अर्थव्यवस्था: देशव्यापी लॉकडाउन अर्थव्यवस्था के लिए अच्छा नहीं था और यह देश के आर्थिक विकास और विकास के लिए एक झटका था। परिवहन निलंबित होने से रेलवे और सड़क परिवहन एजेंसियों को करोड़ों का नुकसान होता था।

प्रदूषण स्तर: यह लॉकडाउन का एक महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव है। सभी प्रकार के परिवहन को निलंबित कर दिया गया था और साथ ही लोगों को अनावश्यक रूप से घूमने से मना किया गया था क्योंकि वायु गुणवत्ता सूचकांक में भारी सुधार हुआ था।

निष्कर्ष: कोरोना वायरस महामारी पर लगाम लगाने और इसे सामुदायिक स्तर पर फैलने से रोकने के लिए लॉकडाउन बहुत जरूरी था। इसके नकारात्मक प्रभावों के बावजूद, लॉकडाउन बहुत महत्वपूर्ण था।

> "भाषा विचार की पोशाक है।" - डॉ. जानसन

शतरंज

देबजानी मोहरार
वरिष्ठ प्रबंधक (सचिवीय)

शतरंज की उत्पत्ति भारत में हुई जो फारस और बाद में अरब तक फैल गई। अधिकांश ऐतिहासिक राजा नेतृत्व में विशेषज्ञ होते हैं, तलवारबाजी में नहीं। 'रानी' के टुकड़े को पहले के रूपों में वज़ीर या वज़ीर या वज़ीर और फेरी कहा जाता था। महान अकबर और अधिकांश अन्य राजाओं के मामले में यह रानी टुकड़ा 'बीरबल' जैसा पुरुष हुआ करता था। रानी का टुकड़ा नूरजहाँ जैसी महिला हो सकती है, जहाँगीर के रूप में जो रोमन सम्राट क्लॉडियस से मिलती-जुलती थी। मन्त्री के रूप में रानी का टुकड़ा यूरोपीय प्रभाव के कारण अप्रचलित हो गया है। यह पहेली की एक शानदार सरणी के साथ आता है जैसे कि रानी बौडिका, केंट की रानी बर्था, नॉर्मंडी की रानी एम्मा, एक्विटेंस की रानी एलेनोर, फ्रांस की रानी इसाबेला, झांसी की रानी, जोन ऑफ आर्क, आदि। शतरंज में, एक है भ्रांति है कि राजा कमजोर होता है। मैग्नस कार्लसन बादशाह का उपयोग माइनर पीस एंडगेम्स में सबसे मजबूत पीस के रूप में करते हैं। वे तीन तरीके जिनसे राजा को पकड़े जाने की धमकी दिए बिना राजा को हराया जा सकता है। शह और मात - राजा एक गलती करता है और जगह से भागने में असमर्थ है, ध्वजारोहण - शतरंज का खेल समय से बाहर चला गया है इंगित करता है कि प्रतिद्वंद्वी के पास कोई ऊर्जा और इस्तीफा नहीं है - राजा खुद को आत्मसमर्पण करता है क्योंकि वह सोचता है कि लड़ाई जारी रखना व्यर्थ है। शतरंज की बिसात से राजा का मोहरा नहीं हटाया जा सकता क्योंकि राजाओं को मारा नहीं जाता था, उन्हें फिरौती और लंबे समय तक यातना देने के लिए इस्तेमाल किया जाता था।

"रामचरित मानस हिंदी साहित्य का कोहनूर है।"
- यशोदानंदन अखौरी

एक राजा का नेतृत्व निहित होता है क्योंकि एक राजा विवेक बनाए रखने में अच्छा होता है जबकि पूरी दुनिया उसे दोष दे रही है, एक राजा अपनी बुद्धि के लिए भाग्य और आपदाओं को एक समान मान सकता है। एक राजा सामान्य स्पर्श खोए बिना मानव जाति के सबसे अच्छे लोगों के साथ चलता है। एक राजा सपने देख सकता है लेकिन उन्हें अपना मालिक नहीं बनाता। एक राजा न तो दोस्तों से दुखी होता है और न ही दुश्मनों से।

सब मनुष्य राजा पर, यहाँ तक कि उसके शत्रुओं पर भी भरोसा करते हैं। गतिरोध की अवधारणा को अधिक जटिलता और विविधता लाने के लिए आविष्कार किया गया था क्योंकि यह प्रतिद्वंद्वी को खेल जीतने के लिए बचाव योग्य प्यादों से रोकता है (विश्वनाथन आनंद की शतरंज खेलने की शैली का एक रहस्य)। यह ब्लिट्जक्रेग शतरंज को मारता है और इसे और मजेदार बनाता है। इसमें अधिक संभावनाओं के कारकों को भी शामिल किया जा रहा है और इस प्रकार, अंतिम अवसरों, छुटकारे के अवसर और लौकिक भाग्य की जादुई औषधि बनाता है। शतरंज के खेल को खेलने के जितने तरीके हमारे ब्रह्माण्ड में तारे हैं, उससे कहीं अधिक हैं। औसत शतरंज ग्रैंडमास्टर इसी अवधि में विंबलडन के पुरुष खिलाड़ी की तुलना में अधिक कैलोरी का उपभोग करता है। यह शतरंज के खिलाड़ी के सिर के अंदर 'ब्रेन फॉग' की ओर ले जाने

वाली अनगिनत अनंत संभावनाएं भी पैदा करता है। 'पागल रानी शतरंज' हमें देवी काली की क्रूरता की याद दिलाती है।

एक रानी शतरंज की बिसात के चारों ओर स्वतंत्र रूप से घूम सकती है, राजा के विपरीत जो एक समय में एक चाल चलता है। इससे पता चलता है कि एक महिला की प्रतिष्ठा को पुनर्जीवित, पुनर्जीवित और पुनर्जीवित किया जा सकता है, जबकि पुरुष की प्रतिष्ठा एक बार खो जाने के बाद वापस नहीं जीती जा सकती है।

बोझ

भास्वती सिन्हा
पत्नि डॉ. तुषार कुमार सिन्हा
उप महाप्रबंधक (आई टी)

कभी सोचा है,
जितनी हमारी रफ्तार होनी चाहिए
हम उतना तेज नहीं चल पाते है,
कभी सोचा है,
हमारी पीठ पर क्या-क्या लदा हुआ है,
उन रिश्तेदारों की झुठी आशाएँ है,
जिनको लगता है तुम अगर कामयाब हुए,
तो उनके काम आओगे,
नहीं हुए तो,
सब से ज्यादा मजाक वो ही तुम्हें बनाएंगे,
और लदा हुआ है एक बोझ
सामाजिकता का
जो जाने अनजाने आपके रास्ते डिसाईड करती है,
और गलत रास्ते पे भेज के,
लौटने के दरवाजे बंद कर लेती है,
एक बोझ उन झुठे लोगों का है,
जिन्हें अंग्रेजी में फेयर वेदर फ्रेंड्स कहा गया है,
जो नहीं चाहते आप उनकी सोच से अलग कुछ हट कर करो,
क्योंकि अगर तुम ऐसा नहीं करोगे,
तो तुम तो फिर भी दोस्त बना लोगे,
वो 'क्लाइंट्स कहाँ से बनाएगें,
अब फिजूल बोझ ले के चलतो हो,
सपने भी नहीं देख पाते जो तुम देखना चाहते,
जिस दिन ये बोझ हटा दोगे
जिंदगी शुरू हो जाएगी .....
और कहीं दूर रेडियो पर गाना चल रहा है,
हर पल यहां जी भर जियो,
जो है समा कल हो न हो .....

"कवि संमेलन हिंदी प्रचार के बहुत उपयोगी साधन हैं।"
- श्रीनारायण चतुर्वेदी

इशान सिन्हा
सुपुत्र डॉ तुषार कुमार सिन्हा
उप महाप्रबंधक (आई टी)

एक बार झांक के देखो ना

एक बार झांक के देखो ना
खोई-खोई आंखों में,
एक बार झांक के देखो ना
अश्को के सैलाब उमड़ते,
पलकों पे मडरायें,
जलन, तपन, बेचैनी बनके,
गालों परे ढुल जाये।
कितनी पीड़ा उस क्रंदन में,
एक बार झांक के देखो ना
सूनी-सूनी आश की खेती,
उम्मीद कहाँ अंकुराये,
नेह, आसरा, बंजर लगते,
सपने क्या मुस्काये
घोर निराशा अंतर-मन में,
एक बार झांक के देखो ना
खोने का रखा ही क्या,
फिर भी घात सताये,
गैरों के स्पर्श मात्र से,
दर्द हरा हो जाए।

एक सवाल

एक सवाल खड़ा है आज
क्या देश है अपना दर्पण के समान
हर रोज जब सड़कों पर निकलते हैं
करता है कोई पॉकेटमारी
तो करता है कोई ठगी बाजार में
तो चौड़े होकर मोटरवाले करते हैं
ट्रैफिक उल्लंघन
ऊंच-नीच का भाव है दिखता
शिक्षा का हो क्षेत्र या
अस्पताल में हो इलाज की बात
ऊचीं पदवी वाले का होता पहले काम
इसलिए
एक सवाल खड़ा है आज
क्या देश है अपना दर्पण के समान

वरुण कुमार सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक (प्रशासन)

"हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है।" - कमलापति त्रिपाठी

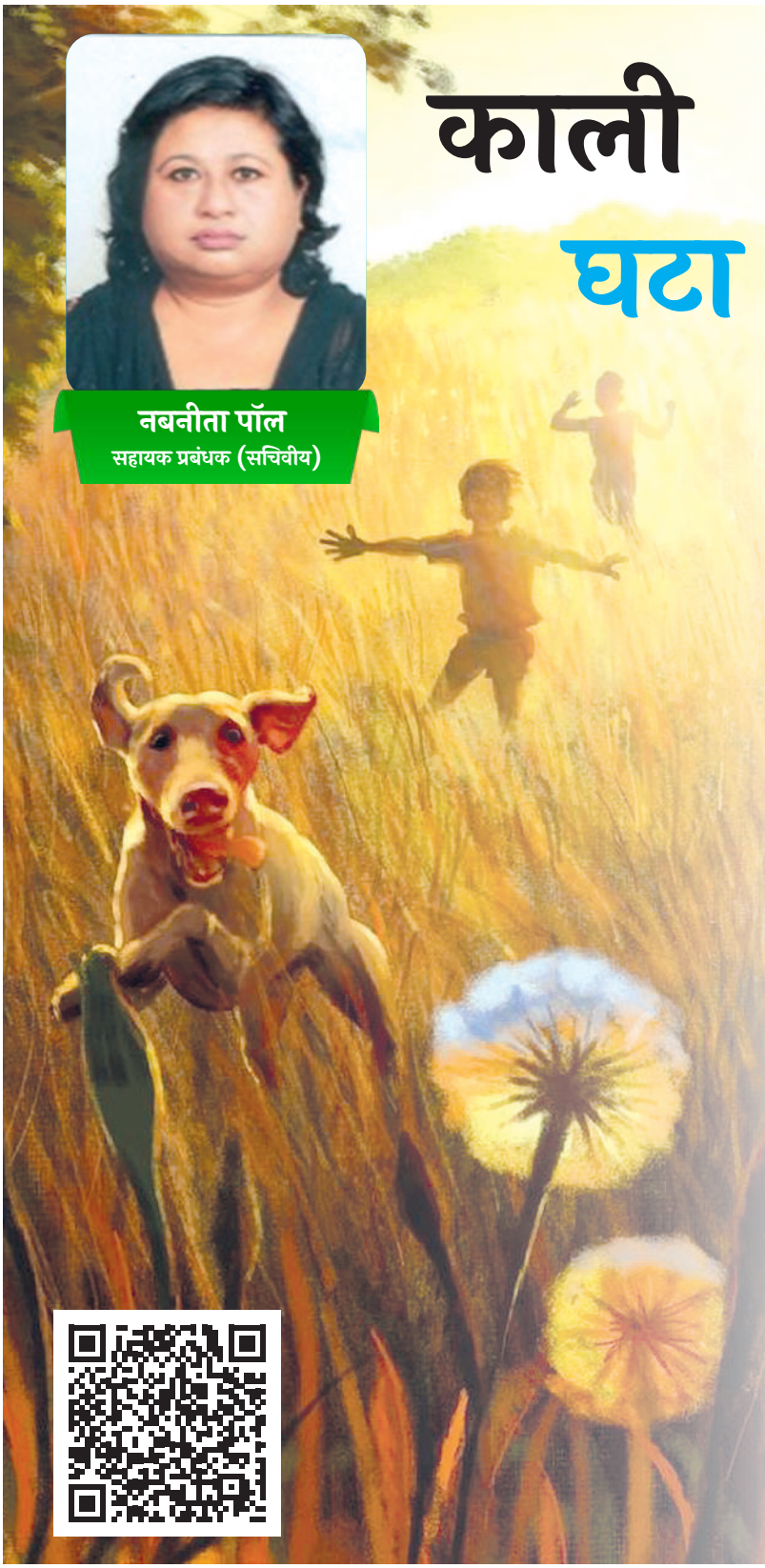

काली घटा

नबनीता पॉल
सहायक प्रबंधक (सचिवीय)

काली घटा छाई है
लेकर साथ अपने यह
ढ़ेर सारी खुशियां लायी है
ठंडी ठंडी सी हवा यह
बहती कहती चली आ रही है
काली घटा छाई है
कोई आज बरसों बाद खुश हुआ
तो कोई आज खुशी से पकवान बना रहा
बच्चों की टोली यह
कभी छत तो कभी गलियों में
किलकारियां सीटी लगा रहे
काली घटा छाई है
ज्यों गिरी धरती पर पहली बूंद
देख इसको किसान मुस्कुराया
संग जग भी झूम रहा
जब चली हवाएं और तेज
आंधी का यह रूप ले रही
लगता ऐसा कोई क्रांति अब शुरू हो रही
छुपा जो झूट अमीरों का
कहीं गली में गड्ढा तो नही
बड़ी बड़ी ईमारत यूँ डर रही
अंकुर जो भूमि में सोये हुए थे
महसूस इस वातावरण को
वो भी अब फूटने लगे
देख बगीचे का माली यह
खुशी से झूम रहा
और कहता काली घटा छाई है
साथ अपने यह ढ़ेर सारी खुशियां लाई है

अंतिम संस्कार

देवांगी चक्रबर्ती
सुपुत्री श्री अभिजीत चक्रबर्ती
सहायक महाप्रबंधक (परियोजना)

वह हाथ जो हमें आशीर्वाद देते थे वह आज शांति से लेटे है
वह चेहरा जो खुशी से भरा था वह आज दर्द से भरा है
चारो ओर सन्नाटा फैला है
पौधे और फूलें मुर्झा गई है
आकाश में काले बादल छा गए है
देखते न देखते लोग दादाजी के मृत शरीर को ले जा रहे है
सब के चेहरे पर दुख भरा हुआ है
अनगिनत लोगों के आखों में ऑसु भरे हुए है

वसंत

स्नेहा दास
सुपुत्री स्वरूप दास
उप प्रबंधक (आई टी)

आंखे खुलती ही सुनी मधुर पुकार,
कुहू कुहू ध्वनि सहित कोयल का राग।
वसंत आ गया, प्रकृति कहती,
सुनहरा पवन सौम्य स्पर्श देती।
गुलाल अबीर से आज धरती रंगीन,
उमंग-उत्साह के साथ नाचे मेरा दिल।
चारों तरफ खुशियां छाई हुई अद्य,
आम की कली और पलाश के मध्य।

"सभ्य संसार के सारे विषय हमारे साहित्य में आ जाने की ओर हमारी सतत् चेष्टा रहनी चाहिए।" - श्रीधर पाठक

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता द्वारा 8वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन

21 जून, 2022 को हडको क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में 8वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय के सभी कर्मचारियों ने बहुत उत्साह के साथ इस गतिविधि में भाग लिया।

यह आयोजन "8वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर भारत के माननीय प्रधान मंत्री के संदेश" वीडियो के साथ शुरू हुआ। इसके बाद, सभी कर्मचारियों ने सामान्य योग प्रोटोकॉल के साथ विभिन्न आसन किए और योग पोर्टल http://yoga.ayush.gov.in पर अन्य वीडियो क्लिप अपलोड किए गए।

"भारतवर्ष के लिए हिंदी भाषा ही सर्वसाधरण की भाषा होने के उपयुक्त है।" - शारदाचरण मित्र

18 और 19 फरवरी, 2023 को कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा गरपंचकोट और अयोध्या पहाड़ क्षेत्र, जिला-पुरुलिया, पश्चिम बंगाल की भ्रमण यात्रा

केआरओ अधिकारियों और उनके परिवार के सदस्यों ने 18 और 19 फरवरी, 2023 को पश्चिम बंगाल के सुदूर पर्यटन स्थलों का दौरा किया, जो पुरुलिया जिले में गरपंचकोट और अयोध्या पहाड़ है जिन्हें जंगल महल के नाम से जाना जाता है। दौरा किए गए कुछ उल्लेखनीय स्थानों में गरपंचकोट क्षेत्र में पंचेत बांध और बारंती झील और अयोध्या पहाड़ क्षेत्र में मार्बल झील, ऊपरी बांध, बामनी जलप्रपात, चरिदा ग्राम शामिल हैं। टीम ने गढ़पंचकोट के रास्ते में मां कल्याणेश्वरी मंदिर और मैथन डैम का भी दौरा किया। नेचर रिजॉर्ट में ठहरने के अलावा प्राकृतिक वन, पहाड़ियां, झरने, नदियां, बांध, आदिवासी गांव, धार्मिक स्थल आदि घूमने के स्थान हैं।

"हिंदी भाषा और साहित्य ने तो जन्म से ही अपने पैरों पर खड़ा होना सीखा है।" - धीरेन्द्र वर्मा

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में दिनांक 24/03/2023 को स्वास्थ्य जागरूकता कार्यकम (Health Awareness Programme) का आयोजन।

आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय, भारत सरकार के पत्र दिनांक 07/03/2023 और हडको मुख्यालय के निदेशानुसार, हडको क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता के सम्मेलन कक्ष में दिनांक 24/03/2023 को स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम (Health Awareness Programme) का आयोजन किया गया उक्त कार्यक्रम में सुश्री इन्द्राणी घोष, मुख्य आहार विशेषज्ञ, मनिपाल अस्पताल, साल्ट लेक ने स्वस्थ जीवन शैली (Healthly Lifestyle) विषय पर पॉवर प्वायंट प्रस्तुति दिया। सुश्री घोष ने खान-पान, रहन-सहन, शारीरिक गतिविधियाँ, आदि पर अपना बहुमूल्य सुझाव दिए। प्रस्तुति के पश्चात् पारस्परिक सत्र (Interactive Session) के दौरान, जीवन शैली में बदलाव को अपनाने और भविष्य में अच्छे स्वास्थ्य को सुनिश्चित करने पर चर्चा. कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय के कर्मचारियों के लिए फायदेमंद रहा। उक्त कार्यक्रम में कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों, प्रबंधन प्रशिक्षु के साथ-साथ संविदा कर्मचारियों ने भाग लिया।

> "जब हम अपना जीवन, जननी हिंदी, मातृभाषा हिंदी के लिये समर्पण कर दे तब हम किसी के प्रेमी कहे जा सकते हैं।" - सेठ गोविंददास

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में 15 से 30 सितम्बर 2022 तक राजभाषा पखवाड़ा

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में 15 से 30 सितम्बर 2022 तक राजभाषा पखवाड़ा मनाया गया। इस अवसर पर श्री देबेश चक्रबर्ती, क्षेत्रीय प्रमुख (प्रभारी) की अध्यक्षता में दिनांक 15/09/2022 से 30/09/2022 के दौरान राजभाषा कार्यशाला एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था। पिछले वर्ष की तरह इस वर्ष अर्थात् 2022 में कोविड पेन्डिमिक के सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए राजभाषा पखवाड़ा का शुभारंभ एवं इसके अन्तर्गत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया था।

क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता में हिंदी पखवाड़ा 15-30 सितम्बर, 2022 तक आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यालय में दिनांक 15.09.2022 को मुख्य द्वार पर राजभाषा का बैनर लगाया गया था। राजभाषा पखवाड़ा का शुभारंभ दिनांक 15.09.2022 को क्षेत्रीय प्रमुख (प्रभारी) की अध्यक्षता में किया गया, जिसमें कार्यालय के लगभग सभी अधिकारीगण/ कर्मचारीगणों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। इस अवसर पर अध्यक्ष महोदय ने कार्यालय में उपस्थित सभी अधिकारियों/ कर्मचारियों से अनुरोध किया कि पखवाड़ा के दौरान कार्यालय के सभी कार्य हिंदी में किया जाए तथा सभी टिप्पण कार्य हिंदी में लिखा जाए।

"भाषा की समस्या का समाधान सांप्रदायिक दृष्टि से करना गलत है।" - लक्ष्मीनारायण सुधांशु

हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन

आदरणीय निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग) दिनांक 15.09.2022 को सुबह 11.30 बजे ऑनलाइन के माध्यम से सूरत से हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन किए थे। इस उद्घाटन के साथ ही दिनांक 15.09.2022 को कोलकाता का हिंदी पखवाड़ा भी शुरू किया गया था। कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी सुबह 11.30 बजे केआरओ सम्मेलन हॉल में एकत्रित होकर निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग) द्वारा हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन ध्यान से निरीक्षण किए।

इस अवसर पर कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय में आयोजित प्रतियोगिताएं

हिंदी टिप्पण लेखन एवं पत्र लेखन प्रतियोगिता

हिंदी निबंध लेखन एवं शब्दार्थ प्रतियोगिता

हिंदी निबंध लेखन एवं शब्दार्थ प्रतियोगिता

हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित हिंदी कार्यशाला

> "भारतीय साहित्य और संस्कृति को हिंदी की देन बड़ी महत्त्वपूर्ण है।"
> – सम्पूर्णानन्द

सतर्कता जागरूकता सप्ताह का पालन

31 अक्टूबर, 2022 से 6 नवंबर, 2022

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में 31 अक्टूबर, 2022 से 6 नवंबर, 2022 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया। जागरूकता सप्ताह का उद्देश्य इस वर्ष के विषय अर्थात् "भ्रष्टाचार मुक्त भारत - विकसित भारत " से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर विचार-विमर्श करना था।

31.10.2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता के कर्मचारियों को शपथ दिलाकर सतर्कता जागरूकता सप्ताह की शुरुआत हुई। सभी कर्मचारियों ने सुबह 11 बजे वर्चुअल मोड के माध्यम से श्री एम. नागराज, डीसीपी द्वारा अधिकारियों को दिलाई गई शपथ ली।

वाद विवाद प्रतियोगिता - 01.11.2022

"हिंदी के पुराने साहित्य का पुनरुद्धार प्रत्येक साहित्यिक का पुनीत कर्तव्य है।" - पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता ने 02.11.2022 को भी एक सेमिनार का आयोजन किया। संगोष्ठी को प्रोफेसर डॉ. निर्मल कांति चक्रबर्ती, कुलपति, पश्चिम बंगाल नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ ज्यूरिडिकल साइंसेज, कोलकाता ने "भ्रष्टाचार मुक्त भारत - विकसित भारत" विषय पर संबोधित किया।

समापन सत्र

सतर्कता जागरूकता सप्ताह का समापन सत्र 04.11.2022 को कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय में रामकृष्ण मिशन इंस्टीट्यूट ऑफ कल्चर, कोलकाता के स्वामी तत्वतानंद महाराज द्वारा संबोधित एक संवेदीकरण कार्यक्रम "हमारे जीवन में मूल्य का संश्लेषण" और वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता के साथ आयोजित किया गया था। क्षेत्रीय प्रमुख एवं कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय के समस्त अधिकारीगण उपस्थित थे।

> "परमात्मा से प्रार्थना है कि हिंदी का मार्ग निष्कंटक करें।"
> - हरगोविंद सिंह

कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा आउटरीच कार्यक्रम

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता ने 03.11.2022 को कॉलेज के छात्रों के लिए एक वाद-विवाद प्रतियोगिता भी आयोजित की। सत्यप्रिया रॉय कॉलेज ऑफ एजुकेशन, साल्ट लेक, कोलकाता के छात्रों के बीच वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का विषय था - "भ्रष्टाचार और विकास साथ-साथ"। कॉलेज के संकाय सदस्यों और छात्रों की व्यापक भागीदारी के साथ 20 छात्रों ने वाद-विवाद में सक्रिय रूप से भाग लिया। डॉ. सुबीर नाग, कॉलेज के प्रिंसिपल और प्रोफेसर डॉ. मैत्री घोष, पूर्व जे.टी. सचिव, WBSEHC अन्य लोगों के साथ विषय के लिए जूरी सदस्य थे।

হাউকো কলকাতা অনুষ্ঠিত ভিজিল্যান্স সপ্তাহ পালনে বৃহস্পতিবার সত্যপ্রিয় রায় কলেজ অফ এডুকেশনে একটি বিতর্কসভা হয়। সভা পরিচালনা করেন সন্দীপ বন্দ্যোপাধ্যায়। বিচারকমণ্ডলীতে ছিলেন অধ্যক্ষ ড. সুবীর নাগ, অধ্যাপক ড. মৈত্রী ঘোষ ও প্রশান্ত কোনার।

केआरओ ने एक आवासीय परिसर में वॉकथॉन के माध्यम से पड़ोस की सफाई के बारे में जागरूकता का आयोजन किया था।

"अहिंदी भाषा-भाषी प्रांतों के लोग भी सरलता से टूटी-फूटी हिंदी बोलकर अपना काम चला लेते हैं।" - अनंतशयनम् आयंगार

दिनांक 25.02.2023 को नलबन फूड पार्क, कोलकाता में वार्षिक खेल दिवस

हडको, कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय (केआरओ) ने 25.02.2023 को नलबन फूड पार्क, कोलकाता में वार्षिक खेल दिवस का आयोजन किया। केआरओ के कर्मचारियों और उनके परिवार के सदस्यों ने उस दिन आयोजित विभिन्न खेलों और खेल गतिविधियों में भाग लिया। क्षेत्रीय प्रमुख (प्रभारी) और केआरओ के वरिष्ठ अधिकारियों के एक संक्षिप्त स्वागत भाषण के बाद, कार्यक्रम की शुरुआत राष्ट्रगान गाकर की गई, जिसके बाद योग सत्र, प्राणायाम और एक साथ शपथ ली गई। खेल दिवस के अवसर पर विभिन्न खेलों एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। थ्रोइंग द बॉल, म्यूजिकल चेयर, मार्बल के साथ स्पून रेस, फुटबॉल मैच, रस्साकशी। विजेताओं को खेलकूद प्रतियोगिता के बाद सम्मानित किया गया।

"दाहिनी हो पूर्ण करती है अभिलाषा पूज्य हिंदी भाषा हंसवाहिनी का अवतार है।" - अज्ञात

आजादी का अमृत महोत्सव के अवसर पर कोलकाता साल्ट लेक में हडको द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रम

हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड (हडको), कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय ने बिधाननगर नगर निगम (बीएमसी) के सहयोग से 12 जून, 2022 (रविवार) को साल्ट लेक प्राइमरी स्कूल, एसी ब्लॉक, साल्ट लेक, कोलकाता परिसर में "वृक्षारोपण कार्यक्रम" का आयोजन किया। श्रीमती रहीमा बीबी मंडल, माननीय मेयर-इन-काउंसिल (पर्यावरण) और श्रीमती रत्ना भौमिक, विधाननगर नगर निगम के वार्ड नंबर 41 की पार्षद ने वृक्षारोपण कार्यक्रम का उद्घाटन किया और हडको के प्रयासों को प्रोत्साहित किया। यह कार्यक्रम भारत सरकार के निर्देशों के तहत आजादी का अमृत महोत्सव (AKAM) के तहत भारत की आजादी के 75 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित किया गया था। विधाननगर नगर निगम द्वारा आयोजित 05.06.2022 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर माननीय मेयर द्वारा हडको को 18 पौधे सौंपकर सम्मानित किया गया था जो उपरोक्त वृक्षारोपण कार्यक्रम के दौरान लगाए गए। प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक, बी.एम.सी के अधिकारी, निवासियों के प्रतिनिधि तथा हडको, कोलकाता के अधिकारी कार्यक्रम के दौरान उपस्थित रहे और परिसर में पौधारोपण किया।

श्रीमती रहीमा बीबी मंडल, माननीय मेयर-इन-काउंसिल (पर्यावरण) और श्रीमती रत्ना भौमिक, पार्षद, 12.06.2022 को साल्ट लेक प्राइमरी स्कूल में हडको वृक्षारोपण कार्यक्रम का उद्घाटन और पौधरोपण

पौधा रोपण करते हडको के अधिकारी (बाएं) और पौधरोपण कार्यक्रम के दौरान उपस्थित बी.एम.सी व स्कूल के अधिकारी-गण

"हिंदुस्तान की भाषा हिंदी है और उसका दृश्यरूप या उसकी लिपि सर्वगुणकारी नागरी ही है।" - गोपाललाल खत्री

हडको कोलकाता द्वारा 11.05.2022 को हडको का 52वां स्थापना दिवस समारोह

हडको के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता ने 11.05.2022 को गोल्डन ट्यूलिप होटल, साल्ट लेक में 52वां स्थापना दिवस कार्यक्रम मनाया। कार्यक्रम में पश्चिम बंगाल सरकार से वरिष्ठ अधिकारी और एजेंसियों, कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय स्टाफ के सदस्यों और सेवानिवृत्त कर्मचारियों के साथ-साथ उनके आश्रितों ने भाग लिया।

उद्घाटन सत्र की शुरुआत श्री पी.के. कुंवर, संयुक्त महाप्रबंधक (परियोजना) के बाद मुख्य अतिथि के रूप में निदेशक, सूडा मुख्य अतिथि और पीएचईडी, पी एंड आरडी विभाग, टाउन प्लानिंग विभाग, म्यूनिसिपल इंजीनियरिंग निदेशालय, पश्चिम बंगाल सरकार और अन्य अतिथियों वरिष्ठ सेवानिवृत्त अधिकारियों डॉ. बी के चक्रबर्ती, पूर्व कार्यकारी निदेशक (पी), कर्नल ए.बी. दास, पूर्व- कार्यकारी निदेशक, श्री पी.आर. दास, पूर्व- कार्यकारी निदेशक, श्री एस. रे, पूर्व- क्षेत्रीय प्रमुख/ प्रमुख परियोजना के का पॉटेड प्लांट के साथ अभिनंदन किया गया।। इसके बाद सभी गणमान्य लोगों ने दीप प्रज्वलित किया। श्री डी. चक्रबर्ती, संयुक्त महाप्रबंधक (परियोजना) ने रिमोट एक्सेस वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से कार्यकारी निदेशक (ओ)/आरएच-केआरओ द्वारा उद्घाटन सत्र के भाषण के बाद मुख्य भाषण पर विचार-विमर्श किया। डॉ. बी.के. चक्रबर्ती, पूर्व- कार्यकारी निदेशक (पी), हडको ने हडको को विनम्र शुरुआत के साथ एक छोटे संगठन के रूप में शुरू करने के बारे में याद दिलाया और प्रौद्योगिकी के महत्व को बहाल किया। निदेशक, सूडा ने मुख्य अतिथि के रूप में शहरी विकास विभाग और नगरपालिका मामलों, सरकार के तहत सूडा के संचालन और आवास और शहरी विकास में हडको की भूमिका के बारे में जानकारी दी। अन्य मेहमानों द्वारा हडको के साथ अपने सहयोग को विस्तृत करते हुए संक्षिप्त भाषण दिए गए। उद्घाटन सत्र श्री विक्टर भट्टाचार्जी, संयुक्त महाप्रबंधक (आईटी) द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव और केक काटने के बाद दोपहर के भोजन के साथ संपन्न हुआ। दोपहर के भोजन के बाद, कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय के परिवार के सदस्यों द्वारा इन-हाउस कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसके बाद एक प्रसिद्ध नृत्य समूह निर्त्यलोक द्वारा लोक नृत्य किया गया। समापन सत्र में हडको के वरिष्ठ सेवानिवृत्त कार्यकारियों के सलाहकार भाषण थे, जिसके बाद कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय अधिकारियों द्वारा एक समूह नृत्य और एक फोटो सत्र आयोजित किया गया।

कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय के पूर्व क्षेत्रीय प्रमुख/कार्यकारी निदेशक जिन्होंने क्षेत्रीय कार्यालय के विकास में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है।

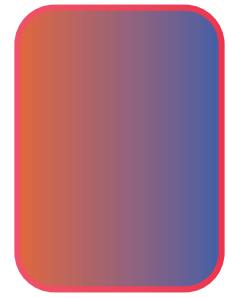

श्री वाई के गर्ग

श्री पी आर दास

श्री एम सी कुंडू

श्री मलय चटर्जी

श्री आर के खन्ना

श्री एस सी शर्मा

श्री एस के चौधरी

श्री एस रे

श्री पी के राजखोवा

श्री राहुज जी श्रीवास्तव

डॉ. डी सुब्रहमणयम

श्री अरुण कुमार

श्री एस साहा

श्री पी.आर. श्रीवास्तव

श्री एस.के. मिश्रा

डॉ. आलोक कुमार जोशी

श्री देबेश चक्रबर्ती
वर्तमान क्षेत्रीय प्रमुख (प्रभारी)

"हिंदी का शिक्षण भारत में अनिवार्य ही होगा।"
- सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या

कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय में विगत 5 वर्षों के दौरान हमारे कर्मठ सेवानिवृत्त सहकर्मी-गण

श्री सुदीप कुमार कुन्डू

ए.एफ. (एस जी)
सेवानिवृत्ति तिथि : 31.01.2019

श्री लक्ष्मण सामंता

वरिष्ठ ड्राईवर
सेवानिवृत्ति तिथि : 31.03.2020

श्री सी. नारायणन

सहायक महाप्रबंधक (सचिवीय)
सेवानिवृत्ति तिथि : 30.04.2020

श्री मदन कुमार दास

सहायक महाप्रबंधक (प्रशासन)
सेवानिवृत्ति तिथि : 31.01.2021

श्री मृणाल कांति सिन्हा

प्रबंधक (प्रशासन)
सेवानिवृत्ति तिथि : 31.01.2022

> "हिंदी साहित्य धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष इस चतु:पुरुषार्थ का साधक अतएव जनोपयोगी।" - (डॉ.) भगवानदास

स्मरण

श्रद्धांजलि

स्वर्गीय सुदीप कुमार कुन्डू

ए.एफ. (एस जी)

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता

जीवनावधि : 12/01/1959 – 06/01/2023

अच्छे इंसान हमारे दिल में इस तरह जगह बना लेते है,
कि मरने के बाद भी वो हमारे दिलों में अमर हो जाते है!

सरकारी/सार्वजनिक क्षेत्र के उधारकर्ताओं के लिए वित्तपोषण पद्धति

(14 नवंबर 2022 से लागू)

नई योजनाएं एवं आरएमसीए के तहत कवर की गई योजनाए- 149, 150, 151, 153,154,160 तथा स्वीकृत योजनाएं भी शामिल जिसमें संवितरण प्रभावित नहीं हुआ है।

क्र.सं.	वर्ग	हडको एमसीएलआर - 8.50%	
		3 वर्ष की निश्चित ब्याज दर (%)	1 वर्ष की निश्चित ब्याज दर (%)
1	ईडब्ल्यूएस और एलआईजी आवास परियोजनाएं	8.95	8.50
2	ईडब्ल्यूएस और एलआईजी कोर इंफ्रास्ट्रक्चर के अलावा आवास, एकीकृत टाउनशिप, स्मार्ट सिटी, मेट्रो, बस स्टैंड/टर्मिनल और सोशल इंफ्रास्ट्रक्चर	9.05	8.80
3	कोर, सोशल इंफ्रास्ट्रक्चर और पावर प्रोजेक्ट्स को छोड़कर अन्य सभी इंफ्रास्ट्रक्चर।	9.20	8.95
4	विद्युत क्षेत्र की परियोजनाएं		
	(क) उत्पादन	10.25	10.00
	(ख) उत्पादन-मरम्मत, उन्नयन और रखरखाव एवं वितरण	10.00	9.75
	(ग) ट्रांसमिशन और गैर-परम्परागत उत्पादन	9.25	9.00
5	सभी परियोजनाओं के लिए भूमि अधिग्रहण	9.60	9.35

हडको वित्तपोषण पद्धति : खुदरा ऋण (हडको निवास)

क्र.सं.	वर्ग	ऋण राशि	अस्थाई दर	निश्चित दर
1	20/05/2016 के बाद स्वीकृत ऋणों के लिए (इस श्रेणी के लिए ब्याज की अस्थाई दर प्रत्येक वर्ष 1 अप्रैल को वर्ष में एक बार पुनः नियोजन की जाएगी और इस श्रेणी में 3 साल बाद ब्याज की नियत दर को पुनः तैयार किया जाएगा)।			
क.	सरकारी कर्मचारी			
(i)	6.00 लाख रुपये प्रति वर्ष तक की आय (आवेदक और सह-आवेदक) और विवाहित होने पर पति या पत्नी सह-आवेदक होंगे।	20.00 लाख रुपये तक	8.95%	9.15%
(ii)	6.00 लाख रुपये प्रति वर्ष से अधिक की आय।	200.00 लाख रुपये तक	9.05%	9.25%
ख.	अन्य उधारकर्ता	100.00 लाख रुपये तक	9.45%	9.50%

हडको - वित्तीय विशिष्टता और सफलता की कहानी

- एक अनुसूची-ए और मिनीरत्न-I सीपीएसई, नवरत्न का दर्जा प्राप्त करने के लिए तैयार
- स्थापना के बाद से लगातार लाभ कमाने वाली संस्था
- वित्त वर्ष 2022-23 में 24572 करोड़ रुपये की स्वीकृति
- आईसीआरए, केयर और इंडिया रेटिंग्स एंड रिसर्च से उच्चतम घरेलू क्रेडिट रेटिंग एएए
- सीएलएसएस, आरआरवाई और आईएसएचयूपी के लिए केंद्रीय नोडल एजेंसी

हडको

G20
भारत 2023 INDIA
वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

हाउसिंग एण्ड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड

(भारत सरकार का उपक्रम)

हडको भवन, भारत पर्यावास केन्द्र, लोधी रोड, नई दिल्ली - 110003

दूरभाष : 011-24649610-21, 24648160, 63, ईमेल : mail@hudco.org

मुद्रण एवं पत्रिका डिजाइन : अंजनी प्रकाशन, कोलकाता, पश्चिम बंगाल, मो. 8820127806, ई-मेल : anjaniprakashan19@gmail.com